

www.vallabhacharyakrupa.org



॥ हिंदो ॥

॥ १७३ ॥

राग मलार मूलत सुरंग हिंदो रेग धामोहन वरनव
रनचूंनरीपेहेरेव्रजवधूचहूं-ओरे ॥ **राग मलार** अ
लापत सप्तसुरनतीनग्रा मजोरो मदनमोहनजूकी
याछविऊपरगोविंदवलितनतोरे ॥ **मलार** मूल
न-आई व्रजनारिगिरधरनलालजू के सुरंग हिंदो
रना ॥ सुभगकंचनतनपेहेरेकसंभीसारी गावतपर
स्परहसिमुडवोलना ॥ इतनंदलालरसिकवरसुंदर
उतव्रखभांनसुताछविसोहना ॥ **रस** कतरंगरह्यो ॥
पीयप्यारीगोविंदवलिवलिरसिपतिजोहना ॥ २ ॥
राग मलार रंगमच्योविहदारहिंदोरेवमूल
ना ॥ गौरस्यामतननीलधातपटघनरामिनिरेम
विराजतनिरषितिरषिष्टजजनमनफूलना ॥ ३ ॥
उरपरवनमालसोहेइंद्रधनुकमानोंउदितभयो ॥
मोतिनद्वारधंगपांतिसमसूलना ॥ वरषतनवरूप
वारिघांष-आवनिरतनफवितगोविंदप्रभूदेवतको
दिमदनभूलना ॥ **मलार** ॥ गोपीगोविंदकेसुरं
गहिंदोरनामूलन-आई टेक ॥ सीखंडखंडभमया
रिसाहेतजुमरुवेमेरुवनाई ॥ तहोपारजातकभू ॥ १७

मसभमराडांडीजरीजराइ ॥ हेमपटुलीमध्यहीराप्र
जीरोचनरनाइ ॥ सषीविचित्रविधिधिरागमलारमें ॥ ३
गलगाय ॥ गो ॥ १ ॥ नंदलालपावसकालवनिव्रजवा
लविहरतसंग ॥ बोलेतहांदादुरपैयाकरतकोकि
लरंग ॥ वरुहानिर्ततवचनमुदितजुअलिचुओरवि
हेगा ॥ वलभद्रवीरगोपालमूलेंराधिकाअरधंगा ॥
गो ॥ २ ॥ जलभरेसरवरसघनतरचुहरितमहीच
हूंरेस ॥ घनस्याममध्यमुपेतजुजुरिइंद्रधनुषसु
वेस ॥ गगनगरजतवीजतरफतमधुरेमेहअसे
स ॥ मूलहिविहवलसकामस्यामासिथलमुक ॥
लितकेस ॥ गो ॥ ३ ॥ नोटंकतिलकजुजरितरुलक
तपांचपिरोजालाल ॥ करवलपमुंडिकाकिंकिनी
करि ॥ चरुगजगतिचाल ॥ आरतवक्तवरुह
प्रहसितवनेनेनविसाल ॥ सुषस्तरमुररिपुरंगरं ॥
गीसषीसंगगोपाल ॥ गो ॥ **मलार** ॥ गोपीगो
विंदकेसुरंगहिंदोरनामूलन-आई टेक ॥ गुंननेक
निरमलपरमपावनप्रथमपहोमिसुवेष ॥ अगु
लीयअगुलीमनिगनचित्रचरित्रसुदेस चहुंसूत्र

॥ हिंदो

॥ १७४

चहुं हि सस्चे परदापद मराग सुरंग ॥ धन हेत हरि हि
डोर सालारचित विविध तरंग ॥ चहुं पास पद्म प्र
चारि पंकज पारजात अनंत ॥ रस लुब्ध को किल करे
कलवल मधुप सरस वसंत ॥ घन घोर जल धर ध
रन उनत मुदित को हो के मोर ॥ तहां विमल सरोव
र विविध सारस चक्रवाक चकोर ॥ गो ॥ १३ ॥ वीच
षंभ कंचन मेरु मांनों धरे रचित रचि निरमांन ॥
मयारि मानिक अति मनोहर उदित तरनिस मां
न ॥ भवराते ही राभ्र मे अलि मम मध्यराजत नील
मरुवा मनोहर तले हस्त सुभ्र सोभित कीर ॥ गो ॥
२ ॥ वीच लाल परम रसाल डंडी विस्वकर्मासाजि
पदुली पिरो जापोति मुकालाल विच विच भ्राजि
पद पद मपा सिं विलोकिलोचन वदन इंदु समान
नवनेह नैच सत साजि रुले सुघर सुंदर सुजांन ॥ गो ॥
कस्वी नैवेन तारतरुनी तूर सुरपी नाक ॥ किं किनी
कनक सदन पुरुर सहीर स एकताक ॥ कामिनी
कोमल वचन बोले विहसि प्रेम गोपाल ॥ हंमिनी
दम के वंदरुम के गगन प्रवेर साल ॥ गो ॥ १५ ॥ पीयु

१७४

पीयु पयैया सद्ध मधुमिव मदन उधित बोल ॥ नवनि
धि ग्रह ग्रह प्रति विलसत सेल घोष हिंदोल ॥ हरि हेत
हरषित सेस सुर सुनि निरषि नारि निवास ॥ राधिका
रति खन गिर धर कलदास विलास ॥ गो ॥ १६ ॥ राग म
नार ॥ आयो आयो रासावन अवमन भावन दुमल
तानि ग्रंथ रे रे रूलत छवि सो नवल ना निगासि ह
रेष रे दुंम फल फले अरध अरध से दुंम पतिके भारता
में सोहत नीनी एकटक फरहरावनि ॥ सघन कुंज म
हापुंजरं धरित त्रिगुन वात प्रवरात पावत नहि
आवन न पावन ॥ मुरादास प्रभुप्यारी को परम सु
ख अपनी उपमां ॥ आयुही आयु लागे सुष पावन ॥ २
मलार ॥ रुले भाई जुगल किमोर हिंदोरो ॥ अति आ
नंद भरे सखी वत लेत पीयचित बोरो ॥ कंचन मनि
केखंभवना ए मोति नरुंम कलीरो ॥ मंद मंद वंदे अति
वसत स्यांम घटा घन घोरो ॥ पीत वसन दांमि निछ
विलजित बोलन लागे मोर ॥ कुंभन दास प्रभु गोवर्द
न धरचित वतरा धाजू की ओरा ॥ ३ ॥ मलार ॥ नवल
होऊ रूलत सुरंग हिंदोरो ॥ स्यांम वरनत नरसिकसि

॥ हिंदो

॥ १८५

कसिरोमनिकुं वरिवरनतनगोरे ॥ नीलांबरपीतांबर
कीछविघनचपलाकेभोरे ॥ हरिदासकेस्वामिस्योमा
कुंजविहारीकीमृदुसुसकनिधोरेथोरे ॥ **मलार**
येहेरैकसंभीसारीवैगीपीयसंगप्यारीसुरंगहिंदोरे
सोभालागेअतिभारी ॥ पीयासिरसोहेफेंतालदकि
रहोअतिरिसदाहिनी ॥ अरुअरुनपिछोरामधुरे
मधुरेरुलवतवजनारी ॥ **स्योमघनक** ॥ **आनई**
नईलेततांगवतसरससुरलाजविहारी ॥ **रसिक**
प्रीतमसंगकरतअनंगरंग ॥ **गंगभयोभयो**
सुषमरजादाभंगटारी ॥ **रंगन** ॥ **सुरंगहिंदोर**
नांमाईरुलतरंगभरो ॥ **ते** ॥ **पीयपीयप्यारी** ॥ **येहेरेपीयरो**
पटकसंभीसारीतेस ॥ **परितुपावसघनचहुंदिसधुं**
मडो ॥ **तेसोईविषकर्मसुघरअरुतमनमानिक**
वचितठोरठोरचितरुचिरभांतिभांतिकरै ॥ **चतुर्भु**
जप्रभृगिरवरधरहसिहसिसुसिकातजातसहेचरी
विचित्रदेतओटिकाखरो ॥ **नर** ॥ **रुलतनवरंगसं**
गश्रीराधागिरधरनचंदसहेचरीसबगढीभईआनंद
भरिगावे ॥ **सप्रसुरनिरागरंगरूपतालवरमृदंगअ**

१८५

वधरवरमूर्च्छनादिकतांनभावे ॥ **श्रीदेहावनजमुं**
नातीरवोलतपिकमोरकीरमंदमंदगरजतघनम
हफुंहीआवे ॥ **धंलादिकसिवसुजांनमोहेसवसुर**
विमानपहोपहृष्टिकरतसावेगोविंदजनगावे ॥ **र**
रागनर ॥ **हिंदोरेरुलतनवलविहारी** ॥ **सं** ॥ **रुलत**
धृषभांननंदिनीप्रांनइतेअतिप्यारी ॥ **नीलांबर**
पीतांबरकीछविघनहोमिनिअनुहारी ॥ **पुलकि**
पुलकिप्रीतमउरलागतजगंलायवलिहारी ॥ **र**
रागनर ॥ **छवीलोगुपलेरुलेछवीलेहिंदोरनां**
छविलेसेखंभरोऊडांछविलीचारुछवीलेजरा
यहीरातनअमोलनां ॥ **छविलेनवनिकुंजछ**
विलेमधुपगंअछविलेजमुनातरकदमविलील
नां ॥ **छविलीगोपीकुलावेछविलीवांनीमुंनावेवव**
नमृदुवोलना ॥ **छवीलीसीधुंनिगावेछविलीमु**
रलीवजावेछविलेप्रीतमप्यारीकरतरुकोलना ॥
छवीलविठलसप्रभृप्यारोगिरिधारीलालछवी
लीराधासंगकरतकलीलना ॥ **रागमालव** ॥ **आं**
ईआंईसकलवजनारिरुलनहरिकेहिंदोरना ॥ **नवस**

॥ हिंडो ॥

॥ १९६ ॥

तसाजिकुरंगमनेस्ति आभूषनचारु आछेसौरंगव
सन अमोलनां कंचनखंभ आछेजटितमाणिकम
निपटेलनिमरुवेतिसुत अमोलनां कुंभनदासप्र
भूगोवर्द्धनधारी लालमधुरमधुरदेत लोलना ॥ २ ॥
राग मा लव ॥ ललतसुरंगहिंडोरेगिरधर सुंदर गो
वर्द्धनपरवतपर चरुं ओरगावत कुलवत त्रियावर
नवरनपेहेरेतन अंवर ॥ तेसी येरांमि नि को धतिच
रुंदिस ते ते मेई घनपरमिरहेधर ॥ तिहे ओसररमक
तपीयके संगलागिर ही ब्रज रत्नान मुतागर ॥ च
टकी लोची राही राकोल टक नलट किरघो भुव ऊप
र ॥ श्रीरघुवीर प्रभु की लाल लवि मोहे ब्रषभान सु
तागर ॥ ३ ॥ **राग कल्याण** ॥ हिंडोरे ललत लाल गोवर्द्ध
नधारी सोभा रानी न जाई हो ॥ वाम भागि ब्रषभान
नंदिनी ननु सत अंगवनाई हो ॥ अतिसकुमारि ना
रि उरपति हे मोहन उर सोल गाई हो ॥ मिलिपीतपटफे
हेरात हे घनदांमि निदुरि जाई हो ॥ मानहु तरुन
तमालमाक्षिका अंग अंग अरु गाई हो ॥ गौरस्याम
तनमरकतमनिपरकन वेलिछवि पाई हो ॥ ३ ॥

॥ १९६ ॥

मिलिसुखसीधुविलसि होऊजनसवसुहेचरीसू
खपाई हो ॥ चतुर्भुजदासलालगिरधरनसुसुरनर
मुनिमिलिगाई हो ॥ ४ ॥ **राग हमीर कल्याण** ॥ हेखो
माई स्यांमहिंडोरे लले ॥ निरषिनि रषिमन मोहन
सूखछवि ब्रजजनमन अति फुले ॥ कनक खंभव
हुभांति वनाए सुंदर परमसुहाए ॥ पर ललित भगवि
राजततां मे ही रा लाल लगाए ॥ २ ॥ वाम भागि ब्रषभान
नंदिनी ओर चंद्रावलि मोरी ॥ नवलवधू चंद्रदिसग
ही मनहुं प्रेम रंग बोरी ॥ ३ ॥ तं मे रंग कल्याण मधुसु
रनवलजुवतीजनगावें ॥ श्रीविठ्ठलगिरधरनलाल
कोरमकिरुमकिरुले कुलावे ॥ ४ ॥ **राग कल्याण** ॥
रमाकिरुमकिरुले कुलावें गोपीजन राधाप्यारी
कोहिंडोरे तेसी येक संभारी पेहेरे ते मेई राजत
वरनवरन चरुं ओरें घन घोरे ॥ योही ते डुरि डुरि जा
तदांमि नीहेन सकत अमरुषत डुरि गात गोरे क
ल्याण के प्रभू गिरधररी ॥ जिवसभ एडारत हेतु न तोरे
॥ २ ॥ **राग कल्याण** ॥ ललत स्यांमपिया संग रंग हिंडो
रना ॥ वरनवरन अंवर तन पेहेरे ब्रजजुवतीजनगाव

॥ हिंडो ०

॥ १९७ ॥

तसकलगीतनचितचोरना ॥ १ ॥ तेसीयेरितुसांवनम
नभावनहरियारीभूमिमंदमंदगरजतघनघोर
ना ॥ तेसेईपिकचात्रकवनबोलतअतिप्रमुदित
मनकेकीकीकुलाहलकोओरना ॥ २ ॥ सहेचरीच
रुंओरकुलावतअतिआनंदभरिपटतरकोंदामि
नीसमतलना ॥ पीयविहारीलालललितदंष्ट्रतिल
लितादिकनिरविषेमविवसजोनतनिओरना ॥ ३ ॥
राग ईमनि ॥ सैनकोमकीलायोसुसावनआयो ॥
चलिसखीभूलिएसुरंगहिंडो ॥ सुकीजेलालमन
भायो ॥ १ ॥ हावभावकेसंभवनोहरकचघनगगन
सुहायो ॥ कांमनयतिरुविभांननंदिनीरसिकराय
वरपायो ॥ २ ॥ **राग ईमनि** रूलतरंगभीनीसंगभां
मिनीलीने ॥ रसभरंदोऊरूलतओरफूलतअंस
अंसभुजहीने ॥ १ ॥ ब्रजनुवतीकुलावतगावतकोहि
मदनछविछीने ॥ कछदासरमाकनिरंगराख्योगि
रधरलालप्रवीने ॥ २ ॥ **राग कांरुतो ॥** आजुमूलीरीरं
गहिंडोरेप्यारीपीयकेसंग ॥ गोरेतनफवीसुरंगचुं
नरीपीतवसनसोहेसांवरेश्रंग ॥ तेसेईवादरओरु
रिआएतेसीपेगावेललितादिकभीनेरंग ॥ नंददा

१९७

सप्रभूकीछविनिरषतवारोंरतिपतिकोहिअनंग ॥ २ ॥
राग केदारो ॥ होंतोरुलीरीहिंडोरेमकिरमकिपीत
मप्यारेकेसंग ॥ तेसेईवादरओरुरिआएसुहाए
कनिरहीरीदामिनीचमकिचमकि ॥ १ ॥ कवरुंकवरुंनो
हीनांहीफुंहीडारनरुमकिरुमकि ॥ सुघररायकेप्र
भूकोंरसवसकरिलीयोअवकहाकसांवनतमकित
मकि ॥ २ ॥ **राग विहागरो ॥** रूलतगिरधरलालयहछ
विरीमोपेंवरनीनजाई ॥ रतननदितकोसुरंगहिंडो
रोलागतरमकसोहाई ॥ १ ॥ तेसीईउडतपीतउपरेंना
कसंभीपागकछकधसिआई ॥ संगराजतदृषभांन
नंदनीकुंवरवनमोलीरुसई ॥ २ ॥ निरविनिरविफूल
तरूलतआनंदउरनसमाई ॥ श्रीविहलगिरधरना
पीयांसवजुधतिनकेसुरवदाई ॥ ३ ॥ **राग अडा नोराधेन**
रूलतिरमकिरमकि ॥ मनिकंचनकोसुरंगहिंडोरो
तामध्यदामिनीचमकिचमकि ॥ १ ॥ गावतगुंनगिर
धरनलालकेमिलिब्रजभांमिनिरुमकिरुमकि ॥
कठिनकांमगदाधरप्रभूपरमानोआरसीरमकिर
मकि ॥ २ ॥ **राग अडा** हिंडोरोरीब्रजकेअंगनमांओ

॥ हिंदो

॥ १७८

हंदावनकीसधनकुंजमेंजहांतहोरंगराओ ॥ १ ॥ ब्रजकी
नारिसवेंजुस्त्रिआंईएकगावतिसुरसांओ ॥ रसिकप्री
तमकीवानिकनिरपतसंकरतांउवनांओ ॥ २ ॥ राग
अनो ॥ सांवनकीप्रन्योमनभावनहरिआएघनमूलो
गीपचरंगजोरिवांधिहिंदोरे ॥ पेहेंगेगीकसुभीसारी
कंचुकीकसिवाधिकारीहीराकेआभूषनतनसोहे
अंगगोरे ॥ १ ॥ धरिहोंउरकुसुमहारनिरखोगीवारवा
रनेनननिहारितंदलालकधूकवेसुथारे ॥ रसिकप्री
तमसुषरसंगपावसरितुविलसोगीभेदोगीसांवरे
अंगकंठभुजाजोरे ॥ २ ॥ रागअनो ॥ सोतराखिले
रीमोदातरलभए ॥ इतनुकुंजहारकरमपरासिजा
तउतजसुनालौगा ॥ १ ॥ आवतजातलपरातलत
नसोंताऊपरडुमतांनछए ॥ कल्यांनकेप्रभूगिरध
रीरिवसभएरुलतनएनए ॥ २ ॥ रागअनो ॥
रुलनआईहिंदोरेमनमोहनरंगवोरे ॥ सबविधिसुघ
रसुजानसुंदरीअंगअंगरुलकरुकोरे ॥ १ ॥ पांनपा
तसुसिकातजातओरवातकहेतप्रीतमचितचोरे ॥
रसकतरुमकतमिलिहोमिनिज्योगावतभोंहमरोरे ॥ १७८

२ ॥ हरियारीमेंनारीनारीसारीबुलीकन्यारीजोरे ॥ प्र
भूकल्यांनगिरधरसुषसागरमांनोंमिलीहिंदोरे
२ ॥ रागविहागरो ॥ रंगहिंदोरनारुलनआंईते
सीयेपावसरितुपरमसुहांईघटाचरुंओरछांई ॥
कोकिलाशब्दसुहांईतेसीयेअधरधरेंसुखीवजा
ई ॥ १ ॥ वनेंदोऊएकदाईतांनलेतमनभोंईरीरिरीमि
प्यारीउरकंठलाईदेववधूचदिधांईपोहोपनदृष्टि
करांईरसिकप्रीतमतहांवलिजाई ॥ २ ॥ विहागरो
रुलनअरुनीरीवनमाकरेंगीवगांठिगाहिजोरी
हसतफूलतडुलावतहारीदेखोधोकेमेंछोरी ॥ १ ॥ सु
रजावोतोअधिकसपानेतोनवदोजोरुकिगाहि
जोरी ॥ कल्यांनकेप्रभूगिरधरनरसिकवरकाहेकोमे
हमरोरी ॥ २ ॥ रागसोरमि ॥ रूलोमेरीप्यारीहिंदोरे
गोपाललालरुलवतथोरेंथोरेंकंचनरतनजरित
केखेभाडांडीलालअमोले ॥ १ ॥ नौतनवसनआभूष
नपेहेरेकंचुकीसोंधेवोरे ॥ काजररेषवनीनेननिमें
प्रीतमकोचितचोरे ॥ २ ॥ ललितादिकरुलवतआनं
दभरिछविकीउवतिरुकोरे ॥ कस्यसप्रभूगिरधरा

॥ हिंदो की छवि सदा रहो मन मोरे ॥ ३ ॥ राग सोरहि ॥ मूलतः
 ॥ १९९ ॥ सांवरें संग गोरी ॥ अमित रूप गुंन सहे जमाधुरी ॥
 सोभा सिंधु कोरे ॥ १ ॥ उत सिर मोर मुकट की ल
 टक निइत वेदी छवि रोरी ॥ कुंडल लोल कपोल न की
 छवि इत हिवनी कच डोरी ॥ २ ॥ नक वेसरि मुक्ता की
 माई चोप परी डरुं ओरी ॥ रसिक प्रभु वल्लभ कटा
 क्ष छवि हाव भाव चित चोरी ॥ ३ ॥ राग के जे जे वं
 ती ॥ आनु तो हिंदो रे मूली छै यां कह्यो की ॥ गोपी जन
 गदमो नो चित्र के सदन की ॥ देव देव तरंगी लेने न
 वो लत मधुरे वेंना मोहे सब कोटि को मछ विले वदन
 की ॥ गावत मधुर धुनि मोहि सुर नर मुंनिसंकर सेम
 हा जो गीतारी छुटि मिन की ॥ १ ॥ त्रिविधिस मीरज
 हा वंसी वद मूलें तहां मंद मंद गावें सषी राधे के रवन
 की ॥ नंददास प्रभु जहां ललिता दिक कुलावें तहां भ
 ई हेम गन सिंधु सोभा स्यां सघन की ॥ २ ॥ जे जे वं
 मूलत नवल लाल कुलवत प्रजवाल जमुंन के तीर
 माई रच्यो हे हिंदो रनां ॥ १ ॥ ते सेई बोलेरी मोर की डा
 करे चरुं ओर पवन गवन सोधे की रुको रनां ॥ २ ॥ ते

१९९

सेई फुलेरी फूल हरत मन की मूल अलिगन गूंजे ॥
 माई मर के अमोलनां ॥ ३ ॥ नंददास प्रभु प्यारी जो
 री अद्भुत भारी देखि बोई की जे जे से चंद रेच को रनां
 ॥ राग जे जे वंती ॥ फूल को हिंदो रोव न्यो फूलि र
 ही जमुंन ॥ फूलन के खंभ होऊ फूलन की डांडी ॥
 चारि फूल नवनी मयारि फूलि रहे विलनी ॥ १ ॥ ता
 में मूलें नंद लाल सषी सब गावें स्यां लवां ए अंगरा
 धा प्यारी फूल भई मगना ॥ २ ॥ फुले पशु पंछी सब
 देखि पाप कटे तव फुले सब लाल वाल मिटे डुषद
 रना ॥ ३ ॥ फुले सब देव मुंनि बंला करे वेर धुनि नंददा
 स प्रभु फुले करे वंदु रगना ॥ ४ ॥ पद ॥ राग अडा
 पवित्रा के पद ॥ राग सारंग ॥ पवित्रा पेहेरत गिर
 धर लाल ॥ रुचिर पाट के फोंदा करि करि पेहेरा वतत्र
 जवाल ॥ १ ॥ आस पास सब सषा मंडली मनों कमल
 अलि माल ॥ कुंभ नरास प्रभु त्रिभुवन मोहन गोव
 र्दन धर लाल ॥ २ ॥ राग सारंग ॥ पवित्रा पेहेरत राज
 कुंमारा ॥ तीनों लोक पवित्र की ये हे श्री विद्वत गिरध
 रा ॥ अति पवित्र त्रीया धडु विलसत निरषिमद

॥ प० रा०
॥ २०० ॥

नभयो मार ॥ परमानंदपवित्रकी माला गोकुलकी
निजनारा ॥ २ ॥ राग सारंग ॥ पवित्रापेहेरनकोरिन
आयो ॥ केसरिकुंमकुंमसरंगदागोकुंदनहारव
नायो ॥ १ ॥ जेजेकारहोतवसुधापरसुरमुनिमंग
लगायो ॥ पतितपवित्रकी येसुखसागरसूरदाह
जसगायो ॥ २ ॥ रे ॥ अथ रास के पद ॥ राग सारंग
वेहेनिसहोंद्रा राधीवांधतिवलि ॥ श्रीगोपा
लके ॥ कनकधारभरि ॥ अद्वितकुंमकुंमतिलक
करतनंदलालके ॥ १ ॥ आरतीकरतदेतन्योछावरि
मंगलगावतवालके ॥ २ ॥ अमकरनप्रभुमोहनना
गरप्रेमपुंजजवालेके ॥ २ ॥ राग सारंग राखी
वांधतिहेनंदसंगी ॥ रतनजटितकी सुभगवनी
अतिमोहतकमनमानी ॥ १ ॥ विप्रबुलायदर्शवहु
दक्षना ॥ जोसोदामनहरषानी ॥ कुंभनदासागिरध
रकेऊपरसर्वसुवारतिआनी ॥ २ ॥ इति श्रीवर
सहिनके कीर्तनसंपूर्णम् ॥ इंदोलिखितंपुस्त
कंठ जीवराजप्रकनकी ॥ श्रीकल्याणमौ
संवत् १८०८ वैशाखवदि ॥ श्रीशुभंभूयात् ॥ २०० ॥

श्रीकल्याणनमः ॥ अथनित्यकेकीर्तनलिरख्यते ॥ रा
गभैरवा ॥ जेजे श्रीवक्षभप्रभु श्रीविठलेशसाथे निज
जनपरकरतरुपाधरतहायमाथे ॥ १ ॥ दोषसवइस्किर
तभक्तभावहीयेधरतकाजसवेसरतसरागावतये
नगाथे ॥ काहेकोंदेहदमतसाधनकरिमूरखजनवि
द्यमान ॥ आनंदत्याजिचलतवपो ॥ अपाथे ॥ २ ॥ रासिक
चरणशरणसरारहेतहेवडभागी ॥ जेजे ॥ अपनोकरि
गोकुलपतिभरततहिवाथे ॥ ३ ॥ रागदेवगंधार ॥
श्रीवक्षभचरणशरणजायसवसुखतलहिरोरस
नागुंनगायगायदरसनप्रसादपाय ॥ ओरकाजत्याग
भाग श्रीवक्षभसंगिदिरो ॥ १ ॥ नैचिंततरहो श्रीव
क्षभ श्रीविठलेशइनादिकेरूपरांगइनहिरसवाहियेरे
श्रीविठलेशगिरिधारीयाहीरसरहेतभारीचाहना
जोचाहेतोयहीचाहचहियेरे ॥ २ ॥ रागदेवगंधार
जेजेजे श्रीवक्षभनंदन ॥ मायावादकियो जुनिकंद
न ॥ १ ॥ नामलेतकारतभवकंदन ॥ मायावादकीयो
जुनिकंदन ॥ २ ॥ मायावादकियो ॥ जुनिकंदन ॥ पुष्ट
भक्तप्रापतभुवमंडन ॥ ३ ॥ प्रगटपुरुषोत्तमचचेतच

॥ नित्य ॥ २०१ ॥ **रुखदा सगावत श्रुति छंदन ॥ ३ ॥ राग देवगंधार**
जें जें जें श्रीवल्लभ नंद ॥ कोटिकला श्री हंदावन चंद्र ॥
निगम विचारत नलहे पार ॥ सो गकुर श्री प्रकाजी के
द्वारा ॥ २ ॥ से ससरस मुष करत उचार ॥ लीला ही गिरिधार
सो हाथ ॥ १ ॥ ब्रज जन जीवन प्राण आधार ॥ ३ ॥ राग
भैरव ॥ ३ ॥ ठो हो गोपाल लाल डुहो धोरी गैया ॥ सद्य २
धमधिपी वोधैया ॥ १ ॥ भोर भयो वनत मच धोरि ॥ १ ॥
घर गोप वगर सव खोले ॥ २ ॥ गोपार ही पथनियां धो
वो ॥ अपनो अपनो दहो विलोवे ॥ ३ ॥ संग के सषाधुला
वन प्राण ॥ रुखनां मलै नै मंगल गाए ॥ ४ ॥ भूषन वसन
पलटि पेहेरां ॥ ५ ॥ चंदन तिल कलिला वनां ॥ ६ ॥
चतुर्भुज प्रभु श्री गोविंद नधारी ॥ मुष छवि परबलि
गई महेतारी ॥ ७ ॥ भैरव ॥ जा गो मेरे जगत उच्चा
रो ॥ कोटि मंदन वारो मुसिक नपर कमल नैन नैन के
तारो ॥ १ ॥ संगले उगवाल वाल और वछ सव ज मुनाकती
रजिन जाउ मेरे प्यारो ॥ परमानंद कहत नें रानी दूरि
जिनि जाउ मेरे वजर पवारो ॥ २ ॥ भैरव ॥ प्राछो नी
कोलों नो मुष भौर ही दिषाईये ॥ निसके उनी देने न तो

तरात मी ठेवे ना भाव ते हो सी के मेरे मुख हिव लाइये ॥
 १ ॥ सकल मुष करन त्रिविधिता पहरन उर को ति मरवा
 दोतुरत न साईये ॥ २ ॥ हारें गदे गवाल वाल करो हो कलेऊ
 लाल मि सी मोटी छोटी मोटी माषन सो रवाईये ॥ ३ ॥ तन क
 सो मेरे कहे पांवारि फेरि डारी मैया वेनी तो गुं वनाइ
 गहेरुन लाईये ॥ परमानंद प्रभु जननी मुक्ति मन फुली
 फुली अंगन समाईये ॥ ४ ॥ राग भैरव ॥ भोर भाव तो श्री
 गिरधर देख्यो ॥ मुभग कपोल लोचन छवि निर
 षतने न सुफल करि लेख्यो ॥ १ ॥ नद मिष परम अनूप
 विराजत सो भामन मधु कोटि विसेख्यो ॥ २ ॥ चतुर्भुज प्र
 भर सरासर मिष को परम भागवल इकटक देख्यो ॥ ३ ॥
राग विभासा ॥ ३ ॥ विगुपाल प्रात भयो देषु मुख तेरो ॥
पाछें ग्रह काज करो नित्य नेम मेरो ॥ १ ॥ विहित निसा अरु
एविसा प्रकट भयो भान ॥ कमल मेते भूमर उडे जा गि
ये भगवान ॥ २ ॥ बंदी जन हारें गठे करत हे किल कार ॥ मधु
खें नगां न करत लीला अवतार ॥ ३ ॥ परमानंद स्वा मि गोपा
ल जगत मंगल रूप ॥ वेद पुराण गावत हे महिमा अनूप
४ ॥ राग मकली ॥ लाल को मुष देखन हो आई ॥ कालि मु

॥ नित्य ॥ खदेवि गई दधि बेचन बेगि गई गयो हेविका श्री ॥ दिन ते
 ॥ २०२ ॥ दूनों राम लाभ भयो गायन वदिया जाई ॥ आर्द्र हो धा
 यय भाय साथ की मोहन देउ जगाई ॥ मुनि त्रिय वच
 न विहसि उठि वेते नागरि निकट बुलाई परमानंद स
 यानी ग्वाल निसेन संकेत बताई ॥ ५ ॥ अथ श्री य
 मुना जी के पद ॥ रागरां मकली ॥ श्री यमुना जी तिहा
 रो दरस मोहि भावे ॥ श्री गोकुल के निकट रहेत होल
 हेरिन की छवि आवे ॥ मुख करनी दुषहरनी श्री यमु
 ना जो जन प्रात उठि लावे ॥ मदन मोहन नृकी घरी पि
 यारी पदरां नीजु कहावे ॥ हंदावन में रास रच्यो हे मो
 हन मुरली वजावे ॥ मुरली प्रभु तिहारे मिलन को के
 विमलि जमुगावे ॥ रागरां मकली ॥ श्री यमुना
 जी यह प्रसाद हो पांऊ ॥ तिहारे निकट रहौ निसवास
 रां मकली नगांऊ ॥ मंजन करो विमल जल पा
 वन चिंता कलुष वहांऊ ॥ तिहारी रूपाभांन की तन
 या हरि पद प्रीति द्वांऊ ॥ २ ॥ बीनती करुं यह वर मांगूं
 अधम संग विसरांऊ ॥ परमानंद चारि फल दाता मर
 न गोपाल लडांऊ ॥ ३ ॥ रागरां मकली ॥ श्री यमुना

जी अधम उधारनी में जां नी ॥ गोधत संग स्यां मघन
 सुंदर तीर भंगी दां नी ॥ गंगा चरण पर सते पाव
 न हरि सिर चिकुर समानी ॥ सात समुंद भेरिय मभ
 गिनी हरि नय सिषलि पदां नी ॥ २ ॥ आलिंगन चुंब
 नर सविल सत पावन हरि सिर चिकुर समानी ॥ प्रेम पुं
 जत कुरां नी ॥ गोविंद प्रभु रवितन या प्यार भक्ति मुक्ति
 की पां नी ॥ ३ ॥ रागरां मकली ॥ श्री यमुना जी तिहा
 रो दरस हो पांऊ ॥ श्री गोवर्द्धन प्रसाद वन वजर ज
 गल गांऊ ॥ दिन रस पांऊ ॥ श्री गोकुल कुरां नी या
 द हांऊ ॥ दामन ऊपर कुरां कृपानि जरासन के संगर
 हांऊ ॥ ४ ॥ अथ पुं डिता के पद ॥ राग विभासा ॥ श्री गो
 वर्द्धन गिरि मधन कंदारों नि निवास की यो पिय प्या
 री ॥ उन्मिलि भोर मुरति रंग भीनी नंदन दन दृष भांन
 दुलारी ॥ १ ॥ उत विगलित कचमा लमर गजी अट पटे
 भूषन रग मगी सारी ॥ इतहि अधर मिस पागर ही ध
 सि दुहंरि मध विलागत अति भारी ॥ २ ॥ धूमत आव
 तरति रन जी ते करति संग गजवर गिर धारी ॥ चतुर्भुज
 दाम निरविदं पति मुषतन मन धन की नो वलि हारी

॥नित्य०

॥२०३

रागधं चम ॥ तुं मसों बे नि दे दी नाही ॥ घर घर गवन
करत हो गिर धर पिय चितनां ही एक गांड़ी ॥ कहा क
हों सुंदर घन तुं मसों जो होत मन माही ॥ **कलदास प्या**
री के वचन सुं निरुदे मोरु मुसिकां ही ॥ १ ॥ राग रां म
कली ॥ आनु हरि रें न उनी दे आग ॥ अंजन अधरु न
लार महा वर नैन तमो लख बाण ॥ **सिथलित वसन**
मरग जी माला कंकन पीठि मुहाण ॥ लटपटी पाग अ
टपटे भूषन विन गुं न हार बनाण ॥ २ ॥ सिथल गात अ
रुचाल उगमगी भकुरी धनुष धराण ॥ मानहुं मन म
थ चाप भेद धरि रघो जो रिकर आगे ॥ ३ ॥ रां म कली
आवत लालन पीया गभीने ॥ सिथल अंग उगम
गत चरण गति सो ते न हार उर चीने ॥ पारिजात
मंदार माल लटपटात मधुप मधु पीने ॥ गोविंद प्रभू
पीषत ही जा उत हां अधर दसन क्षत कीने ॥ ४ ॥ अ
थ कलेऊ के पदा ॥ राग भैरों ॥ खेलियें आंगन छगन
मगन की जिये कलेवा ॥ छीकें ते सारी दधि ऊपर तें का
दि धरी पेहेरिले उर गुली फेंटवां धिले उमेवा ॥ **गवा**
लन के संग खेलन जाउ खेलन के मिस मनन अधा

२०३

उकोंन परी प्यारे लाल नि सदि न की देवा ॥ सरहा समदन
मोहन घर ही खेलो प्यारे ललन भवराच कडोर दे हो हंस
मोर परेवा ॥ **१ ॥ राग भैरों ॥** होवलिवलि जां उकले उला
लकी जे ॥ धीर पां उघत अति मीठे हे अब को को स्वछली
जे ॥ **१ ॥** वैनी वदे सुं नो मन मोहन मेरो कद्यो पती जे ॥ श्री
दो इध सद्य धोरी को सात घंटे भरि पी जे ॥ **२ ॥** ही वारी या
वदन कमल पर अचरा प्रेम जल भी जे ॥ **३ ॥** सो जाय खेलो
यमुं नातट गोविंद संग करि ली जे ॥ **४ ॥ राग विभास**
करो कले उवलिरां मकलतं मरु देति ज सो दामै या
पाछे वछ ग्याल संग ले के चलहु चरावन गैया ॥ १ ॥ पाय
ससिता धत सुरभी को हित करि भोजन की जे ॥ जग
जीवन अजर तला उले जननी को सुषदी जे ॥ २ ॥ सी स
मुकट कटिका छिका छिनी पीत वसन तन धारो ॥ ले
हुल कुट मुरली कर मोहन मन मय दर्प निवारो ॥ ३ ॥
मग मरति लवक श्रवण कुं उलमनि कौ स्तुभ कंठ बना
यो ॥ परमानंद स्वां मिको गकुर ब्रज जन मोद वदायो ॥ ४ ॥
३ ॥ राग वि ॥ करत कलेऊ रोऊ भैया ॥ सोरी तौरि सांनि
मांषन में मिश्री मेलिष वावति मै या ॥ **१ ॥** काचो इधली

नित्य
२०४

यो धोरी को ता तो करि मधिप्यावति धैया ॥ करि अचव
नवी रा लै ब्रजपति या छे चले चरावन गैया ॥ २०४ ॥ अथ
चीरहरन के पदा ॥ रागां मकली ॥ मोहन हम हारी तुम
जीते नागरनट परदे उह मारे कांपत हेत नतीते ॥ १ ॥ र
सिक गोपाल लाल अवलनि पर एती कहा चनीते ॥
परमानंद प्रभु हम सब जानत गाल बजावत गीते ॥ २ ॥
॥ रागां मकली ॥ मोहन देहो वसन हमारे कहेंगी
जाय ब्रजपति जूके आगे करत चनी ललारे ॥ तुम
हजराज कि सोरनंद सुत सवहि के पांन प्यारे ॥ गोवि
ंद प्रभु पीयरा सीति हारी सुंदर सखुं मारे ॥ २ ॥
भैरवा ॥ वनत नही जमुंती जी को न हैवो ॥ चोली चीर
कल्ल लै भाजे कहि न भयो धर जैवो ॥ जो हरि हम सो
असी करि हो तो यह घाट न एवो ॥ श्री विठल गिरधर
न लाल सो जानी करि घर जैवो ॥ ३ ॥ रागां मकली
लिनि मागति वसन आपने ॥ सीत काल जल भीतर
गढी आवत नाहि द्याने ॥ तुम हजराज कुं मार प्रव
ल अतिकोन परी यहैवाने ॥ हम सब दासीति हारी ब्र
जपति तुम बहु निपर सयाना ॥ ४ ॥ अथ मंगलमो

२०४

गसरे के पदा ॥ रागां भैरों ॥ मंगल मंगलं ब्रजभुवमं
गलं ॥ मंगल मिह श्री नंदय सो दाना मसुकीर्तन मे
त दुचित रो त्संग मुलालित पालित रूपे ॥ १ ॥ श्री
श्री कृष्ण इति श्रुति सारं नाम स्वाते नारायण तापा
परमिति मंगल रावं ॥ ब्रजसुख भौरी वयसु सुंदरी
सुंदरी गुण निरूपमभावा मंगल मिधु चया ॥ २ ॥
मंगल मिषत्स्मित युत माक्षणीषण मुन्नत
नासा पुरगत मुक्ताफल च लन ॥ कोमल चलदं गु
लिदल संगत वेणु नाद विमो रत वंदन भुवि जा
ता ॥ ३ ॥ मंगल मखिल गोपी शितरति मंथर गति वि
भ्रम मोहति रास स्थित गान ॥ त्वं जय सततं गोव
र्धन धर पावय निज दासानं ॥ ४ ॥ भैरों ॥ मंगल
माधो नाम उचारा ॥ मंगल वदन कमल कर मंगल मं
गल जन की सदा संभारा ॥ देषत मंगल पूजत मं
गल गावत मंगल चरित उदारा ॥ मंगल श्रवण क
थार स मंगल मंगल तनव सुदेव कुं मारा ॥ २ ॥ गोकुल
मंगल मधुवन मंगल मंगल रुचि वंदन चंद ॥ मंग
ल करत गोवर्धन धारी मंगल भेषज सो दाने ॥ ३ ॥

॥ नित्य ॥ मंगल धेनु रेनु भुवि मंगल मंगल मधुर स्वजावत वेनु
 ॥ २०५ ॥ मंगल गोपवधू परिरंभत मंगल कालिंदी पय फें
 नु ॥ ४ ॥ मंगल चरण किसलय मणि मंगल मंगल
 कीरति जगत निवास ॥ अनुदिन मंगल ध्यान ध
 रत मुनि मंगल मति परमानंद हास ॥ २ ॥ भैरव ॥
 मंगल रूप जसोदानंद ॥ मंगल मुकट कांन मधिकुं
 उल मंगल तिलक विराजत चंद्र ॥ मंगल भूषण
 सव अंग सोहत मंगल मूरत ॥ नंदकंद ॥ मंगल मु
 कट कांख मेचों पै मंगल मुरली वजावत मंदार ॥ मं
 गल चाल मनी हर मंगल दरसन होत मिटो दुःख
 दंड ॥ मंगल व्रजपति गोम सवन को मंगल जस गा
 वत श्रुति छंद ॥ ३ ॥ भैरव ॥ आजु उदि भोर नव कुं
 ज कांन न सखा गद्दी भई राधिकारंग भीनी ॥ विल
 सि मुष वेद संग नवरंग पिय स्याम घन कांमकी
 सैन सव जी तिलीनी ॥ १ ॥ सुभग विकसित वदन ने
 न अतिरसम से मोरि मुष हसी कछु सकुच कीनी
 श्री विठल गिरधरन संग नागरी जागि सवरे निआ

नंद हीनी ॥ २ ॥ ४ ॥ अथ मंगला के दरसन होत समे के प
 द ॥ राग विभास ॥ नैन मेरे घूंघट मे नै समात ॥ सुंदर व
 दन नंद नंदन को निराषि निराषि न अघात ॥ १ ॥ अतिर
 सलुब्ध महारस ले पट जानत न एको वात ॥ कहा क
 रों दरसन मुष माते ओट भए अकुलात ॥ २ ॥ दरवार
 वरजत हो हारी तउ देव नहि जात ॥ सूरसिक गिरध
 र विनु देखे अलपक लपस मजात ॥ ३ ॥ विभास
 अखिय निवहे देव परी ॥ कहा कौन बारीज मुष ऊप
 र लागत ज्यों भवरी ॥ १ ॥ चितवन रहेति चकोर चंद्र लौं
 नहि विसरति एक घरी ॥ जे घपि हटकि हटाकि होरा
 खति ल्यों ल्यों होति वरी ॥ २ ॥ भुवि जोर ही वाजलर रूप
 में प्रेम पीयूष भरी ॥ सूरदास गिरधरतन परसत लूट
 तनि सि सगरी ॥ ३ ॥ राग रांम कली ॥ सखा मोहि हरि
 दरसन को चाउ ॥ सांवरें सों प्रीति वाटी लाख लोग रि
 साउ ॥ १ ॥ स्याम सुंदर कमल लोचन अंग अंग नित भा
 उ ॥ सूर हरिके रूप राची लाजर होके जाउ ॥ २ ॥ विभास
 नंद सरन गुरुजन की भीर ॥ तामें ललन वदन नीके दे
 षतन पांऊ ॥ विनु देखे जीय अकुलाइ जाइ दुष पाइ

॥ नित्य ॥
॥ २०६ ॥

जदपि वडेई खन उठि आउ ॥ लेचलिरी मोहि जसु
नाके तीर जहां बलवीर सुंदर वदन होखि नैन सिराउ
नंदरास प्यासे कों पांनी पिवाइ लेंजि वाइ जीय की
तू जानें तो सो कहा हों जनाउ ॥ २ ॥ राग देवगंधारा ॥
प्रीत मरो ऊवने मरग जे वागे ॥ नवनिकुं जते निकसि
प्रात ही यीय पाछे धन आगे ॥ १ ॥ खंडित अथुर पयो
धर मंडित गंड मविराजत हागे ॥ छरी लररी उरमा
ला अर्धघूं घट छवि पागे ॥ २ ॥ नषा सिंधु परे मकसन
की सैना छटे हेर नवागे ॥ व्यास को मिनी को मुख
सरव सुविले स्यो स्याम सभागे ॥ ३ ॥ अथ मंगल
आरती के पद ॥ राग भैरवी ॥ नैन भरि देखों गिरधर
को कमल मुख ॥ मंगल आरती करों प्रात ही वारन
निरषत होत प्रसन्न मुख ॥ १ ॥ लोचन विसाल छवि सें
चिरु रे में धरो कृपा ॥ अब लोक न चारु भकुटी नुरु
ख ॥ चतुर्भुज रास प्रभु आनंद निधि निरखि करों इ
रिस वरे निको विरह दुःख ॥ २ ॥ राग भैरवी ॥ मंगल
आरती गोपाल की ॥ नित उठि मंगल होत निरखि
मुख चितवन नैन विसाल की ॥ १ ॥ मंगल रूप स्याम

२०६

सुंदर को मंगल छवि भकुटी सुभाल की ॥ चतुर्भुज रा
स सदा मंगल निधि वानिक गिरधर लाल की ॥ २ ॥
राग रांम कली ॥ आरती की जे स्याम सुंदर की ॥ नंद
कुमार राधिका वर की ॥ १ ॥ भक्त करि दीप प्रेम करि वा
ती साधु संगति करि अनुदिन राती ॥ २ ॥ आरती जु जुव
ती मन भावे ॥ स्याम लीला हित हरि वंस गावे ॥ राग
विभास ॥ रतन जटित कनक थार मधु सोहेरी पमा
ल अंगारिक चंदन अतिवहु सुगंधि माई ॥ घन नन
नन घंटा घोर नन गालरट करत नन नन नत तथे
ईथे ईकरति हे एक राई ॥ नन नन नन नतान मान रा
गरंग सुखंधान गोपी जन गावे गीत मंगल वधाई
चतुर्भुज गिरधर लाल आरती वनी रसाल वारन
तन मन प्राण जसोरा नंद राई ॥ ३ ॥ अथ स्त्रोत्र के
पद ॥ राग आसावरी ॥ कर मोदिक माघन मिश्री लेंकुं
वस्के संग डोलत नंदरां नी ॥ मिसु करि पकरि रूवा यो ॥
चाहति बोलति मधुरी बां नी ॥ १ ॥ कनक करो रासो धोउ
बरनो उलसीत धरि आनी ॥ हेम परा आंगन में रास्यो
चंदन कां कसी नां नी ॥ २ ॥ आवो वलि आंगन में घेलो
वात कहं एक छा नी ॥ खिलो नातात अमोल मंगाये

॥ नित्य

॥ २०७

बलि अजहं नही जोनी ॥ ३ ॥ यों लाई मंजन हित जन
नी कोरि चानुरी गं नी ॥ मन में म तो करत उ विभाजे ॥
उषित कच अरु मां नी ॥ ४ ॥ एकरा ज कुं मार अर्द्ध न्हा
तहि भाज्यो ता की क हं क हा नी ॥ वै नी नव दी र ही त न
क सी ड ल हि नि देखि ह मा नी ॥ ५ ॥ फिरि न्हा ए पे हे रे प
ट भूषन मन में आ नंद आ नी ॥ विष्णु दास गिर धर न
म या नो मा त क ही सो ई मा नी ॥ ६ ॥ राग विंतावल ॥
आउ गुपाल सिंगार व नां ऊं ॥ अति सुगंध को करो
उवर नो पा छे उल्लास क जु न्हा वां ऊं ॥ १ ॥ अंग अंगो छि
गुरुं तेरी वों नी फूल नर चि हा चि भाल व नां उ ॥ सुरंग
पाग जर तारी तो रार त न प चित मिर पे च व नां ऊं ॥ २ ॥
वा गालाल सु न ही को पा हरी ई जार चर न न विर चां
ऊं ॥ पटु का मर न वे ज नी रंग को ह सु ली हे म ह मे ल व
रां ऊं ॥ ३ ॥ गज भाति न के हार मनो ह र उर मा लाले उ
र पे हे रां ऊं ॥ लें दर प न दे खो मे रे चारे निर षि निर षि उर
ने न मिरां ऊं ॥ ४ ॥ ॥ अथ सिंगार के पदा ॥ राग विलावल
पी तां वर को चोल ना प हि रा व ति मै या क न क छा प
ता पर धरी नी नी एक तै मा ॥ १ ॥ स य न लाल चु ना व
की जर क सी ची रा ॥ हं सु ली हे म ज रा य की उर रा ज त

ध मधु मे वा प क रा न मि ग ई अ प ने क र ले तु मे जि मां ऊं ॥ विष्णु दास को
य हे रु पा फल वाल च रि त हो नि सा दि न गां ऊं ॥

२०७

ही रा ॥ २ ॥ ग दी निर खे ज सो म ती फू ली अंग न समा य का
जर ले विं डु का दी यो ब्र ज जन मु मि का य ॥ ३ ॥ नंद वा वा मु
रु नी र ई एक तां न व जा वे ॥ जो ई मुं ने ता को मन ह रे प र मा
नंद गा वे ॥ ४ ॥ राग विलावल ॥ हो वारी न व नी त प्रि
या ॥ नित उ वि दे न उ रा ह नो आव ति चो री ला व ति घोष
त्रि या ॥ १ ॥ तुं म ब लि रां म संग मि लि के य ह आं ग न रे
लो हो ऊं भै मा ॥ नि र षि निर षि ने न न सु धु पां ऊं प्रान जी
वन धन सां व लि या ॥ २ ॥ जो ई भा वे सो ई ले उ मे रे चारे म
ष न मि आ इ ध ये या ॥ च तु भुं ज भ भ क गिर धर का के घ
र तु म हं ते न हि अ धि का ली या ॥ ३ ॥ राग विलावल ॥ सुं
र हो रा को न को मुं र म ड वां नी ॥ भे द व ता यो ग्वा लि
नी जा यो नं र रां नी ॥ सु र भाल ति ल क दी ये सुं द र मु
सि कां नी ॥ सुं द र ने न नि ह रि लि यो क म ल नि को पा
नी ॥ २ ॥ सुं द र ता ति हं लो क की ले ब्र ज में आं नी ॥ पर मां
नंद ज सो म ती स व मु ष ल प टां नी ॥ ३ ॥ विलावल ॥
ते मे री ला ज ग मा ई हो रि ख नो दे दी रा ॥ दे ह वि दे ही के
र हा मि टी घूं घ र ओ रा ॥ १ ॥ क म ल ने न तुं म कुं व र हो ह
ल ध र ते छो रा ॥ छे ल छ वि ले रूप मे भ ई नो र क पो रा ॥ २

॥ नित्य ॥
॥ २०८ ॥

श्रीगोपालतुंमचतुरहोहममनिकीचोटा॥ परमानंद
सोईजानिहेजाहिप्रेमकीचोटा॥ ३॥ ४॥ अथमांन
चोरीकेपरा॥ रागदेवगंधार॥ जोतुंमसुंनहुंजसोरागो
री॥ नंदनंदनमेरेमंदिरमेंआजकरहेचोरी॥ होभईअ
निअचोनकठाढीकद्योभवनमेंकोरी॥ रहेछपाइस
कुचिमीचकहोइमनहुंभईमतिभोरी॥ २॥ मोहिभ
योमांषनपछिताचोरीतीहेविकमोरी॥ ३॥ गहिवां
हकुलाहलकीनोतवगहिचरणनिहोरी॥ ४॥ लागे
लेननेनजलभरिभरिमेहेरिकेनिनतोरी॥ सररा
सप्रभूदेवनिसादिनअसीचलकसलोरी॥ ५॥ १॥ देव
गंधारनितउठिदेनउराहोआवे॥ यहजुगवारिजो
वनमदमातीरुंवेईसोषलगावे॥ कहिधोभाजन
धरेपराएकहामेहोमोहनपावे॥ लरिकाअतिसकुं
मारगहेकरहलधरसंगविलावे॥ २॥ कवहुंकहेति
कंचुकीफोरीकवहुंकओरवतावे॥ कवहुंकरईमथ
नियांलैंकेंआंगनसोरमचावे॥ ३॥ मनतेरोलाग्यो
कमलनेनसोंउतरवहुतवनावे॥ चतुर्भुजप्रभूगि
रधरसुखइहिमिसछिनुछिनुदेख्योभावे॥ ४॥ २॥

२०८

देवगंधार॥ श्रीमेरोइतनकसोगोपालकहाकरिजा
नेदधिकीचोरी॥ काहेकोआवतिहायनचाबतिजीभ
नकरहीथोरी॥ १॥ कवछीकेतेमाषनघायोकवदधि
मरुकीफोरी॥ अंगुरीनकरिकवहुंनहीचाखतघर
हीभरीकमोरी॥ २॥ परमानंदनंदरानीकेसुतकोंजो
कंचुकहेसोथोरी॥ इतनीवातसुनीजवलीनिनिवि
हसिबलीमुषमोरी॥ ३॥ ३॥ रागआखरी॥ एरीगो
पालसोंमेरोमनमान्योकराकोगोकोयरी॥ अव
तोचरणकमललिपरांनोभावेसोहोयरी॥ मा
परिसाइवापघरमारेहमेवराऊलोकरी॥ अवतो
यअसीवनिआईधिधनारओसंजोगरी॥ २॥ वरुइह
लोकजाउकिविमेरोओरपरलोकनसाइरी॥ नंदनंद
नकोंतोऊअछाडोमिलौंगीनिसांनवजाइरी॥ ३॥ ४॥
रागआखरीहोभोरीमेरोकोरुसयानो॥ इतनोजां
निषीजतहीहोंयाकोइधकोंगईनोलोंमाटदरांनो
१॥ कोंनउपाइकरोंसुनिसजनीमंदिरमेंसबदधिवि
खरांनो॥ बोलिलियेसवसषासंगकेपीयोहोवाल
कनंदलकमानो॥ २॥ लेंउछंगलगायहिरदेसोंतव

॥ नित्य मोहनमुरिकें मुसिको नो ॥ हरि नारायन स्यां मदास के प्र
 ॥ २०७ ॥ भूदेखे सव जजन को हियो सिरां नो ॥ ३४ ॥ अथ संग
 रम मुष के वद ॥ १ ॥ भे तो ॥ श्री नाथजी को ध्यान मे रें
 निसदि नारी माई माधरी मूरति सोहनी सरति चि
 तली योचुराई ॥ गाल पागल टकि भाल चिबुक वेसर
 कंठ माल करन फूल मंदहास लोचन मुषराई ॥ मोर
 पंख सी सधरें मोतिन के हाग रें बाजू वंदे पट्टी कर
 मुंडिका मुहाई ॥ छुड घंटिका जे हरि ॥ पुरु विछिया
 सुदे स संग संग देषत उर आनंद न समाई ॥ २ ॥ मुरा
 ली अधर धरें स्यां मग देव जनु वेती मां हस प्रसुरन
 तां नगां नगो वई नराई ॥ निरपि रूप अति अनूप छ
 के सुरनर विमान बहम पद किं कर दा मोहर बलि जा
 ई ॥ ३ ॥ राग भे ॥ श्री कृष्ण जू को ध्यान मे रे निसदि
 नारी माई ॥ मन के महे लप्रीतिके कुंज जामें जडुराई
 ध्र ॥ सांवर वरन को मल चरण नष देषें चकचोंधी हो
 तपाइनें पुरपेंजनी सो विधि नें बनाई ॥ दाहिने पद प
 द मता ते देहे करि धरत आली ए सें चरण दुष के हरन
 हे सदा मुषराई ॥ लाल इजार ता के विचकं चन के ता ॥ २०७ ॥

रलगे काछ नी पचरंग ता पर किं कि नी छवि पाई ॥ वन
 माल मुक्त माल कंठ वनी कौस्तभ मणि पीतांबर चट
 कता मेहां मिनि दुति पाई ॥ २ ॥ वाजू वंदे अंगुरी मुंद
 री नगन की अति चमत कार अरुण अधर मधुर सु
 रनि मुरली वजाई ॥ कमल नैन विमल कांति कुंडल
 प्रति विंव होत आनंद सो मुष मां नोर घौरी मुसि
 काई ॥ ३ ॥ घूंघर वारी अलक रुल क की ये चंदन खो
 र और मोर मुकट सी सधरे वें न सुंदरताई ॥ कह भूग
 वां न हित रां मराय प्रभु निहारि श्री गोपाल श्री गो
 पाल रसनार रत्नाई ॥ ४ ॥ राग वितावला ॥ माईरी
 आज और कामि और प्रति छिनु और ही और दे
 खिये रमिका गिराज धरन ॥ नित प्रति नव छवि वर
 ने सुकोमल कवि नित ही सिंगार वागे वरन वरन ॥
 स्यां मतन संग संग मो दत कोटि अनंग उपजी सो
 भा अंतरंग विस्व के मन हरन ॥ चतुर्भुज प्रभु को रूप
 सुधाने नन पुरपांन की जे जी जे रही पे सदा शरन ॥
 ३ ॥ राग वितावला ॥ सुभगा सिंगार निरपि मोहन के
 लेहर पन करपी यहि रिषावे ॥ आपुन ने कुनिहारि

॥ नित्य

॥ २१०

ये बलि जांऊ आ जु की छ विक छूक हेत न आवे ॥ भूष
न वसन रहे यों यों फ वि छ वि अंग अंग अरु त चि
त चुरावे ॥ रों मरो म पुल किंत न सुंदर फल न र चिरु
चि पाग व नावे ॥ २ ॥ अंचल फेरि करति न्योछावरित
न मन अति अभिलाख वरावे ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिध
र को रूप सुधा पिवत नेन पुर त्रय ता पतु आवे ॥ ४ ॥
विलास ॥ अजु को मिंगार सुभग सांवर गोपाल
को करेत न वनि आवे दे पे ही वनि आवे भूषन सब
भांति भांति अंग अंग अरु त चि तिल टपरी सुदे सप
ग चित को चुरावे ॥ १ ॥ मकर कुंडल तिल कभाल कस्तूरी
अति रसाल चित वनि ले चन विमाल कोटि कांमल
जावे कंठ सरी वन काल फेंटा करि छोरन को निरधि
त्रिभुवन त्रिय की धीर जमन आवे ॥ २ ॥ मेरे संग बलि
निहारि कुंज मेहेल वेढे हरि हित की चित वात कहो
जो तेरे जीय भावे ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधर कोटि म
दन मूरति वड भागिन ताहि गिनो तो जात ही लपटा
वे ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ **अथ ग्वाल को पद** ॥ राग विहास ॥ ज सोदा
मथि मथि प्यावति घैया ॥ करित वक डीधरति हे आ

२१०

गें रुचि सो लेत कनैया ॥ १ ॥ वडुरि धरति हरि लेत हे फि
रि फि रि सुंदर स्याम सुंदर ॥ उव सो इध धर सो वेला
भरि पावत कां नून नैया ॥ २ ॥ मन मोहन भोजन को
वेढे परो सतिले करि मैया ॥ षट सके परकार धरे स
ब निरधिर सिक बलि जैया ॥ ३ ॥ **अथ भोजन के प**
दा ॥ राग आसावरी ॥ भोजन को बोलति मेहेतारी
बलि समेत आओ मेरे मोहन वेढे परो से थारी
॥ १ ॥ रिसिरात स्वादन ही पेढे बगिचा सदे लेह मु
रारी ॥ हित चित सो जे वडु अरु वनी के पाछे की जो के
लि विहारी ॥ २ ॥ सुवल सुवाहु श्री दामा संग लेवे तोनें
कुंजां उबलि हाही परमाने ददा सकी जीवनि जसु
मति माय करति मनुहारी ॥ ३ ॥ **राग सारंग** ॥ जेव
त नंद कां नून कगेरे ॥ कछू कयात लि पदात डुलंक
र बाल के लिर सभोरे ॥ १ ॥ वरावदन में मेल्यो जव ही
मिरच सदन टकटोरो ॥ तीछ न लगे नेन भरि आग
॥ २ ॥ जीत वाहिर दोरे ॥ ३ ॥ फूंक कपील नंदे तरो हि
नीली ये लगाय अकोरे ॥ सर स्याम को मधुर को
रहे को नेता तनि होरे ॥ ४ ॥ **राग सारंग** यह तो भा

॥ नित्य गपुखरी मेरी माई मोहन को गोरी मेली ये जेवत है
 ॥ २११ ॥ ब्रज राई ॥ चुचकारत चंद्रज मुख चूं मत उर आनंद
 नस माई लपटे कर लपटा तथो दसो दूध लार लप
 टाई ॥ नवसिध प्रति अंग अंग माधरी सोभा स
 हजनिकाई ॥ मागत सिधरण देरी मैया बेला भरि
 केलाई ॥ चिबुक के सजव गहत किल कि केंत ब
 मैया मुसिकाई ॥ परमानंद नारद मुनि तरसत ध
 खेठे निधि पाई ॥ ३ ॥ राग सारंग ॥ भोजन कर
 त है गोपाल ॥ परसाधरे वृं ज सोदासा जे कंच
 न थाल ॥ करति विहारि निहारति हरि मुख सुंद
 र नैन विमाल ॥ जो भवे सो मा गिले हुवलि माधुरी
 मधुर रसाल ॥ जो मुख मन कादिक को दुख भसो
 विलसति जेवाल ॥ परमानंद रास को भगवत भ
 वत नंद को लाल ॥ ४ ॥ राग सारंग ॥ लाल को रोरी
 ओर वरी ॥ हरदल गायही गपुदरी नोक रुवे तेल
 तरी ॥ नान्ही कनक डुबारा छांनी वेल नवेलिकरी
 परमानंद जेवत रुचि उपजी जव चुपरी सगरी ॥ २
 ॥ सारंग ॥ हरि भोजन करत विनोद सो ॥ करि

करिकोर मुखार विंद मैरेति ज सोदा मोद सो ॥ १ ॥ मध
 मेवा पकवां न मिठाई दूध दही घृत ओद सो ॥ परमानंद
 दप्रभु जेवत रुचि सो भोग ल ग्यो चहुं कोद सो ॥ २ ॥
 श्रद्धा क केपरा ॥ राग सारंग ॥ आगे आउरी छकि हारी
 जव नूदेरी त बहं दे स्यो सुनियन देर ह मारी ॥ मैया
 छाक सवारी पगोई त कितर ही अचारी ॥ गो गो पा
 ल लाल हो भूली मधुर खोलन परवारी ॥ गोवर्द्धन उ
 दर नधीर सो प्रातिवदी अति भारी ॥ जन भगवांन म
 गन भई म्वालि नित न कीरि सो विसारी ॥ ३ ॥ राग
 सारंग ॥ तुम को देरि देरि हो हारी ॥ कहां जुरहे अवलौ
 मन मोहन लेउ न छाक तिहारी ॥ भूली फिरति पा
 वति नही मारग कवहुं न पेउ पायो ॥ पूछति पूछति
 इहां लौ आई तव तुं मवेनु वजायो ॥ ४ ॥ देवो मेरे अंग
 को पसीन उर को अंचल भीनो ॥ परमानंद प्रभु प्राति
 जानिके धाई आलिंगन कीनो ॥ ५ ॥ सारंग ॥ बेठे आ
 गोवर्द्धन गिरि गोद ॥ मंडली सषा मध्यवलि मोहन
 खेलत हसत प्रमोद ॥ भई अवार भूष जव लागी
 चित ये घर की कोद ॥ गोविंद तहां छाकलें आए पठई

ज
 ॥ नित्य ॥ मातं सोह ॥ राग सारंग ॥ विहारी लाल आइ छाक स
 ॥ २१२ ॥ लोनी ॥ अति अरु तपई चंद्रावलि एक गांठि देरो
 नी ॥ १ ॥ देरतस्यो मभुजा ऊंची करि गई वाट अग्यो न
 कलदास गिरधर जूको मन हस्यो विधनार मन रि
 मोनी ॥ २ ॥ सारंग ॥ विहारी लाल आबो आइ छा
 क ॥ गैया इरि गई मन मोहन वगदा बोदे हाक ॥ १ ॥ अ
 र्जन भोज सुवल श्री रामा मधुमंगल कताक ॥
 अपनी अपनी ॥ पातरिले के वेगे फेरि पराक ॥ २ ॥ प
 टर सषी रिषांड घृत भोजन वहु कवान पराक ॥ स
 रदास प्रभु जे मत रुचि सो मे प्रीति करि पाक ॥ ३ ॥
 श्री कृष्ण ॥ तुम को देखि दोरि हो हारी ॥ श्री कृष्ण ॥
 अथ छपन भोजन को पद ॥ राग सारंग ॥ श्री स्वभा
 न सदन भोजन को नंदारिक सब आये ॥ तिनके च
 राग कमल धरिके को पटा पां म डे विद्या एज ॥ १ ॥ चंदन घ
 मि कुं मकु मरग मिलि भोजन भवन लिपा एज ॥ अ
 ति मंजुल कपूर चुरा विधिरचना चोक पुरा एज ॥ २ ॥
 मंडफछा योक मल को मल दल सीतल छां ह सुहाई
 आस परदा फूलन के माला जाल गुहाई ॥ सीतल
 सुभग कुं मकुं माजल सौं कनिक कं र पटा वेठा एज

३ ॥ मंडफछा योक मल को मल दल सीतल छां ह सुहाई
 ज ॥ आस पास परदा फूलन के माला जाल गुहाई ॥
 ४ ॥ सीतल सुभग कुं मकुं माजल सौं सब के चरण पखारे
 ज ॥ करि बीन तीकर जोरि सवन सौं कनिक पटा वेठारे
 ज ॥ ५ ॥ राजतराज गोप भूपति संग विमल भेष प्रही राज
 मान हुसमा जरा जहं सने को मानो सरोवरि तीरा ज ॥ ६ ॥
 धरे अनेक फाटिक कटोरा और कंचन की धारी ज ॥ दिंग
 दिंग धरी सवन के सुंदर सीतल जल भरी नारी ज ॥ ७ ॥ गावन
 लागी गीत व्याह के सुकु मारी नारी ज ॥ अति हुलास
 परहास परस्पर यह सुष सो भाव्यारी ज ॥ ८ ॥ परोसन ला
 गे ओरि तहिन सो जिने की वदन वडाई ज ॥ तिन के दरस
 परस संभावन मंजो सुंदर सलित आइ ज ॥ ९ ॥ ओदन
 की उजल ता सो नो सरजरूप धरि आए ज ॥ प्रीति परत
 प्रीत मज नहि तसो प्रगटई आपुन नारे ज ॥ १० ॥ वरीव
 रा और वरन विजोरा पापर पीतवना एज ॥ कनिक वरन
 विंजन वहु तेरे प्रकार न जात गिना एज ॥ ११ ॥ अमिली
 आम करों रा अर पसनी वृभले सधाने ज ॥ सद्य सी
 रा और सुरभी घृत सौं सौरभ घ्रांन अघ्रांने ज ॥ १२ ॥

॥ नित्य वासोदीसिखिरिनओरसोवाअमरसरसनातोषेज
 ॥ २१३ ॥ अमलमधुरसकराक्षतीक्षनरसलोंनमेलिरसपोषे
 ज ॥ १३ ॥ कंदमूलफलफलपत्रसोंविंजनसवेंप्रकरा
 ज ॥ यहेंमानोप्रगटेभूतलमेंअमृतकेअवताराज ॥ १४ ॥
 ओरवहोतविधिषट्सपरोसेयरोसनवारेहारेज ॥ जेदि
 यहोइयहांसारदकीमतितरिपजातनगिताएज ॥ १५ ॥
 सुखसुगंधिसुवाससुकोमलविविधिभंतिपकवा
 नाज ॥ तेरूपकारपरेनरिकवरुसुखनिकेकानाज ॥
 १६ ॥ करिअचवनउठेसवब्रजजनमनमेंअतिमुखपो
 एज ॥ परभूषनवीरासोंधेसोंजिसदनयधराएज ॥
 १७ ॥ यहसुषसंपतियहसोभाकापेजातवषांनेज
 जूठिनिवाहउगायतहोधरभाग्यआपुनेमानेज ॥
 १८ ॥ सारंग ॥ भोजनकरिउतेरोऊभैया ॥ हस्तपरखारि
 सुधआचमनकरिवीरीलेउकहैया ॥ १९ ॥ मातजसोम
 तिकरतिओरनीकुंनिकुंनिलेतवलैया ॥ परमानंददा
 सकोमकुरब्रजजनकेलिकरैया ॥ २० ॥ सारंग ॥ हरिभा
 जनकरतविनोदसों ॥ करिकरिकोरमुषारविंदमेदेतज
 सोदा मोदसों ॥ २१ ॥ मधुमेवापकवांनमिगईदूधदहीघ ॥ २१३

तओदसों ॥ परमानंदप्रभूजेंवतरुचिसोंभोगलग्योच
 हुंकोदसों ॥ २२ ॥ सारंग ॥ भोजनभलीभांतिहरि
 कीनों ॥ षट्सविंजनमठासलोंनोमांगिमांगिहरि
 कीनों ॥ २३ ॥ हस्ततलसतपरोसतनंदरांनीवालकेलिर
 सभीनों ॥ परमानंदउवस्योसोहसिकेंटेरिसुखकोदी
 नो ॥ २४ ॥ अथवीरीकेपदा ॥ सारंग ॥ लटकिलाल
 रहेश्रीराधाकेभरा ॥ सुंदरवीरीसंवागिसुंदरीहासिहसिदे
 तजातमोहनकरा ॥ २५ ॥ गोपीसवसुखभईगदीजि
 नसोंकेलिकरतसुंदरवरा ॥ जसोवकोरचंदातनचितव
 तस्योंआलीनिरषतागिधरधरा ॥ २६ ॥ कुंजकुटीओरव
 गहंदावनबोलतकोकिलातरुतरु ॥ परमानंदस्वामि
 मोहनपरहोवारीआलीलाछविपरा ॥ २७ ॥ सारंग ॥ राग
 पानेषवावतकरिकविरी ॥ एकटकहेंमोहनमुख
 निरषतपलकनपरतअधीरी ॥ हस्तनिहारतवरन
 स्योसकोतनकीमुधिविमरी ॥ रसिकप्रीतमकेअंग
 संगमिलिछतियाभईअतिसारी ॥ २८ ॥ सारंग ॥ सब
 भांतिछविलीकांरुकी ॥ नंदनंदनकीआवनिछविली
 मुखछविवीरीसुपानकी ॥ २९ ॥ अलकछविलीतिलक
 छविलोपागछविलीसुवानकी ॥ भोंहछविलीदृष्टि

॥ नित्य० विली मुहां नकी ॥ २॥ चरण कमल की चाल छ विली सो
॥ २१४ ॥ भा अंग मुहां नकी ॥ परमानंद प्रभु वें न छ वी लो मुरति
छ विली मुहां नकी ॥ ३॥ अथ ष सषाने के पहा ॥ सारंग
सी परे तेषाने ~~तने नते नते~~ तने तामे षा से ष सषां
ने सी चे अतर गुलाब की बयारिलि परत है ॥ फूलन के
बंगला और फूलन की नीकी फूलन की से जता में पो
दे प्यारी प्रीति है ॥ गुलाब छटत फुहारे द्युति निरु
रु रे वहेत सीतल नीर तरंग चलेत है ॥ ~~अथ~~ न प्रभु मां
तेर स प्रेम प्रीति राते निरषत सषा जने मुख विलस
त है ॥ २॥ ॥ राग सारंग विराजत ही ऊ उ सीर महे ल छ
टत फुहारे आगे नीके ललितोदिक सषा गावे व जावे
रस की चहेल की पेहेल ॥ जव प्यारी फल ले धरत धार
पर थर हेर हेत मानु चहेल ॥ चतुर विहारी गिरधा
री प्यारी की सषा भली बिज नाट हेल ॥ २॥ ॥ सारंग ॥
बैठे ब्रज राज कुंवर प्यारी संग जमुना तीर सीतल बय
रि सषा मंद मंद आवे ॥ अति उदार वै जंती स्यो म अंग
अंग सो भादेत भुज पर स्पर्क मे लि विहसि विहासि
गावे ॥ १॥ कीने पट रिपु तदेह प्रीत म सो अति सनेह गौर
स्यो म अभिराम कोटि का मल जावे ॥ सरदा समर नमो ॥ २१४

हनुमोहनीसेवनेहोऊरहोसिअंगअंगजालगावे॥२॥
राग सारंग॥ अनननजयेहोपीपरहीयेमेरेईमेहे
 ल॥ जोईजोईकहोगेसोईसोईकरुंगीरहेल॥१॥ सिज्या
 सामग्रीवसनभूषनसबविधिकरिराखोंगीपेहेलच
 तुरविहारीगिरधारीपीयकीयहरावरीसहेल॥२॥ **राग**
सारंग॥ कुंवरबेटेप्यारीकेसंगअंगअंगभरंगवलि
 बलिवलिबिभंगजुवतिनमुषदाई॥ **पलितगतिविला**
 महासदंपतमनअतिहुलासबिणलितगलितकुचमु
 मनवासस्युदितकुसुमनिभरतैसियेसरदरेनिजुन
 शी॥ नवनिकुंजभवरगुंजकोकिलकलकुंजतकुंज
 पीतसुगंधमंदवहेतपवनमुषदाई॥ गोविंदप्रभूसरस
 जोरीनवकिमोहनवकिमोरीनिराधिमदनफोजकु
 लमनिगई॥ **सारंग॥** जाकोंबेदरदतब्रंह्मरदत
 संभरदतमेसरदतनारदलुकव्यासरदतपावतन
 हिपाररी॥ अचजनप्रल्हादरदतकुंतीकेकुंवररदतडु
 पतमुतभरदतनाथअनाथनप्रतिपाररी॥१॥ गऊतम
 कीनारिरदतगाणिकागजग्राहरदतराजारमणीक
 रदतमुतनराषतदेदेप्याररी॥ नंददासश्रीगोपाल

॥ नित्य ० गिरधररूपरसालजसोदाकोकुंवरप्यारीराधिकाउ
 ॥ २१५ ॥ रहाररी ॥ २ ॥ राग सारंग ॥ वेदेहरिराधेसंगकुंजभवन
 पनेरंगकरमुरली ॥ अधरधरैसारंगमुषगाडी ॥ मोहन
 अतिहीसुजोनपरमचतुरगुणनिधानजानबुद्धि
 कतांनचूकिकेवजाडी ॥ प्यारीजवगहोवीनपरमच
 तुरगुणप्रवीन ॥ अतिनवीनरूपसहितवहीतांनसुना
 डी ॥ श्रीविठलगिरधरनलालरीहिदई ॥ चंद्रमालकरे
 तभलेजभलेसुंदरमुषदाडी ॥ २ ॥ राग सारंग ॥ सिरधरे
 चंद्रका मोरकी ॥ ग्वालमंडलीमधुधिराजतकोतुक
 मांषनघोरकी ॥ गुंजाफलफूलनकेकरकनराज
 तनेरकिसोरकी ॥ परमानंददासमनमोहनहरतम
 ननैननिकोरकी ॥ २ ॥ राग सारंग ॥ वेदेतालकालिंडी
 केतीरा ॥ लेराधेमोहनदेपठयोयहप्रसारीवीरा ॥ १ ॥ स
 माचारसुनिये ॥ श्रीमुखकेजेकहेस्यांमसरीरा ॥ तेरेका
 रनचुंनचुंनिराखेयेनिरमोलिकहीरा ॥ २ ॥ गुणनि
 धानगिरधरनखविलोयेहेरिपीतांवरचीरा ॥ परमानं
 ददासकोमकुरनेनलोमतिधीरा ॥ ३ ॥ अथराजभो
 ग ॥ आरतीकेपद ॥ राग सारंग ॥ आरतीवारतिराधिका ॥ २१५

नागरी ॥ तनकनकयालभूषनरनरीपकुचकमलमुक
 तावलीमंगनउजागरी ॥ १ ॥ अनुरागछत्रचंचलसमर
 नयनचलभावकुसुमांजलीछइतिगुंणआगरी ॥ कटि
 रुणितमेखलासुभगघंटावलीजालरीयसंजरीय
 कीराति ॥ आगरी ॥ सषाज्जयनिलीयेविविधिकोगनि
 कीयेसुखदगिरिधरनरिऊवतिवरमुहागरी ॥ विष्णुसां
 मीसुमतवर्ति ॥ श्रीवल्लभपरपदमनमनकसदासवड
 भागरी ॥ २ ॥ ॥ सारंग ॥ आरती ॥ पिकारवनगिरध
 रनकीनिरषिजुजुवतीवर ॥ श्रीमदभीनीमणिषचित
 यालघनसारवातीवल्लितललितललितादिकसषी
 हाथलीनी ॥ वेतसी ॥ कुंजरसपुंजपियसंगमिलेवि
 विधिभोजनकीयेरुचिनवीनी ॥ परकरपरमानंदनव
 लविठलनाथदासगोपाललघुकपाकीनी ॥ २ ॥ अथउ
 त्थापनभोगकेपद ॥ राग सारंग ॥ रागनटा ॥ रूपरेषिने
 नापलकलागेनही ॥ श्रीगोवर्द्धनधरकेअंगअंगप्रति
 निरषिनेनमनहरततही ॥ १ ॥ कहारीकहोकछुकहेतन
 वनि ॥ आवेंचितचोसोमागिजुदही ॥ कुंभनरासप्रभुके
 मिलनकीसुंदरवातसषीयनिसोकही ॥ २ ॥ ॥ १ ॥ ॥ १ ॥

॥ नित्य ॥ राग नर ॥ हसत हसत लालन आ मेरे अगना ॥ हो तो दे
 ॥ २१ ॥ विभे सुगम ही मेरी आलीरी कहुन कहि आवे देखे
 छवि भई मगना ॥ १ ॥ जीय कीरी सगई और अधिक रु
 चि भई मोहन मोहा मोनों भयो तन लगना ॥ कर सो क
 र गहि हिर दे सो लगाय लई मिलेरी गोविंद प्रभु सब सु
 षनि सज गना ॥ २ ॥ राग नर ॥ प्रीतम प्रीति ही ते पैये
 जरि परूप गुण सील सुघर ताइन वात न विरुये ॥ १ ॥
 सत कुल जनम करम प्रवीन प्रतिश्रुति पुराण पढ़े ये
 गोविंद कहे विना सनेह सुवालो रसना कहान चैये
 ॥ ३ ॥ राग नर ॥ आजु रंदावन से दधि लटी ॥ कहा मेरो
 हार कहान कवे सरिकहा प्रीति यन लर टटी ॥ १ ॥ बरजि
 ज सोदा अपने को न रुको क मोरति मटु को फूरी ॥ मूर
 दास प्रभुति हारे निरन को सरव सुदे गवालि निहरी
 ॥ ४ ॥ राग नर ॥ भागरी नट नारायण गायो ॥ तान मोन
 वंधान ससुर राग सो राग जमायो ॥ १ ॥ चरणा धुंधरू
 जंत्र भुजनि भरि परनी के रुम कि मिलायो ॥ तत येई त
 त येई लेत गति में गति पति हजरा जरि मायो ॥ २ ॥ सक
 ल त्रियन में सहेज चालुरी आपुन पो अधिक जना ॥ १ ॥

आस स्यामि नीधं निधं निराधे रास मै रंग बटा यो ॥ ३ ॥ ५ ॥
 राग पूरवी ॥ हां के हट कि हट कि गायन गकि ठग कि रही
 गो कुल की गली सब सां करी ॥ जारी अरारी मरोषन मो
 षन उरु कति रो रि रो रि गो र गो र ते परत कां करी ॥ १ ॥ चंप
 कली कुंद कली वरष तर सभरी तामें पुनि देखिय तलि
 खे से आं करी ॥ नंद दास प्रभु जा के दारे जाय गे होत ते
 ई ते वचन मागत लर कि लर कि का रु सो तो हां करी का
 रु सो ना करी ॥ २ ॥ पूरवी ॥ नां रंदावन वन ते आवत
 लाल रि पारो सी सरयो फरि धन तन वसन दां मिनी मां
 नों कुंडल किरनि निराखि मोहर वि ॥ १ ॥ हित ही खिंस अमर
 सो भानि धिगोर ज सो डित अलकन की छवि ॥ स्यां मधां
 मसुर सुती यों सुको चररी यावा निकवरन न को को क
 वि ॥ २ ॥ पूरवी ॥ आगे गाय पाछे गाय इत गाय उत
 गाय गो विरा को गाय न में वसि वोई भावे ॥ गायन के सं
 गधा वे गायन में सचु पावे गायन की पुर रे नु ही ये लेत
 गावे ॥ १ ॥ गायन सो हज द्या यो वै कुंठ विसरा यो गायन
 के हेत गिरि कर ले उगावे ॥ छी त स्वां मि गिर धारी विहलेश
 व पुधारी ग्वाल को भेष की ये गायन में आवे ॥ २ ॥ १ ॥

मोहतलालपागमांकरेपेचनचोकरी॥ सुंदरकुसुमनि
 मुकेसनिवीचग्रथितकुंस्करी॥ १॥ सुरतअमितसिध
 लअतिलोचननिर्ततभुवरसभरी॥ गोविंदप्रभूपीय
 प्यारीसंगवेदेनिवडिकुंजदरी॥ २॥ ॥ **रगमालव** सो
 हतकनककुसुमकरनअरुसोहतमोतिनअवतंस
 लटकतमनमयमनहरन॥ लालपागआधेसिरकुल
 हचंपकभरन॥ गोविंदप्रभूसिंघद्वारगारेसुधियमया
 अंसभुजधरन॥ ३॥ **अथदूधकेपदा॥ रागगोरी॥** लटक
 तचलतहोहनीलेंरी॥ अनोखीतूगाडुहावनहारीकां
 रूपोरिपेठनदेरी॥ वनतेंआवतभईयनविरियांवा
 सरअवतननैकुचितेरी॥ तेपेनरोषयहहितकीगति
 कदिनहिलगकीएसुंदरी॥ ४॥ तुवडगचंचलअंबुज
 वरनीदरसनहोतिमुषनसदेरी॥ चतुर्भुजप्रभुगि
 रिधरनचंदनैतुचचितचोस्योमडुसुमिकेरी॥ ५॥ ॥
रागहमीर॥ डुहोडुहायवोभूलिगयो॥ सेलीहाथव
 छरुवनमिलवतनूपुरकोठमकोजुभयो॥ ६॥ नवजोव
 नीनईधुंनरीकीचटकघूंघटमेंडुरिमुरिकेंचितयो॥
 धोंधीकेप्रभुरंपतिपरस्परप्यारीप्यारोरिज्यो॥ ७॥ ॥

२॥ **अथदूधकेपदा॥ रागईमनि॥** अबेदूधलाईहेन।
 सोदाभैयाकाजेपानललारो॥ कनिककटोराभरिपीजे
 सुषदीजेवजराजलाडिलेवेंनीवदेतेरीभैयारो॥ आछो
 मीरोअतिओदोहेतांमेंमधुरमिठैयारो॥ आसकरन
 प्रभूदूधपीजेजननीकांसुषदीजेप्रातहिउठिकुंघैयारे
 २॥ **रागकांकरो॥** रुसिरुसिदूधपीवतुथ॥ मधुर
 कोमलवचनबोलतप्रांनप्यारीसाधो॥ कनककटो
 राभर्योअंमनदीयोललिताहाथोलाडिलीअचवा
 पयेहेलेपाछेआपुअघात॥ चिंतामणिचितवस्यो
 सजनीनाहिनओरसुहागे॥ स्यामस्यामाकीनवलछ
 विपररसिकवलिविजात॥ ३॥ ॥ **अथसंध्याआर**
तीकेपदा॥ रागगोरी॥ आवेंमाईहेजललनाडुषमोचन
 गोधनसंगकरुणितकरमुरलीसरदकमलरललोचन
 ४॥ कटितलालकाछिनीकाछेंओदेपीतापिछोरी॥
 आपुनरुसतहमावतगवालनरागअलापतगोरी॥
 वरषतकुसुमदेवगणहराधितमोहतषेचरनारी॥ क
 छदासप्रभुरसिकमुकटमनिलालगोवर्द्धनधारी
 ५॥ **गोरी॥** मेरेग्रहआवोनंदनंदनमोहनसरवसु

॥ नित्य ० देहो ॥ रूपरासिगिरधरनखविलोलालवलैयालेहोहो ॥ १ ॥
 ॥ २१५ ॥ निरधिकमलमुषनेनमुफलकरिसनांतवगुणगेहोहो
 कछदासप्रभूगिरधरनागररहसिकंकलपदेहोहो ॥ २ ॥
 ॥ रागगोरी ॥ मोहनगोरोहनकरिदीजे ॥ आबोएकांत
 परिकमेंवेढेमाहोहीपयपीजे ॥ १ ॥ तुम्हरेदुहन्हमारे
 पूरतयहरसअनतनखीजे ॥ रसिकप्रीतमहावभाव
 सोंहिलिमिलिकेंमुषलीजे ॥ २ ॥ कांनूरो ॥ छवीहेला
 लदुहन्तधेंतुधोरी ॥ वारवारफिरिचितमोमाहीदेधि
 वरनभईवोरी ॥ १ ॥ कंकनकुनितकरुचलकुंडलतनच
 दनकीवोरी ॥ माथेंकमलवरनकोटिपारोओहेंपीत
 पिछोरी ॥ २ ॥ कहारीकरोंमोपरघोनपरतहेंमेलीकछ
 गगोरी ॥ कुंभनरासप्रभुगोवर्द्धनधरकोंजवभेटोंभरि
 कोरी ॥ ३ ॥ ४ ॥ अथथोरुकेपदा ॥ रागकांनूरो ॥ रानीजू
 अपनेसुतहेंजिमावत ॥ बरुतवातकहोकेसैंबेलेंवनव
 नमहियांकरिकहिरुचिउपजावत ॥ १ ॥ करतवयारिअपने
 अंचलसोंपोछतवर्द्धनमनमोदवटावत ॥ रसिकप्रीतम
 कोंलेंलेंनंदरांनीहसिहसिकंकलगवत ॥ २ ॥ १ ॥ ईमनि
 वियारुकरतहेंघनस्योम ॥ मधुमेवापकवांनमिटाई ॥ २१५

पिस्तादावरोम ॥ १ ॥ दूधभातरबोवावासोधीलेंआईब्र
 जवोम ॥ १ ॥ आसकरनप्रभूमोहननागरअंगअंगअ
 भिरांम ॥ २ ॥ रागकांनूरो ॥ कीजेलालयहेवारवियारु
 दूधभातओरदारिवनाईवोलतहेंरोहिनीमेहेतारी ॥ १ ॥
 तनीमुंनतअतिहीमनहरग्योसंगउठिचलेदेखकिल
 कारी ॥ परमानंदप्रभुकीवतियनपरजमुषतिवलिव
 तिरारी ॥ २ ॥ ३ ॥ रागकांनू ॥ कमलनेनंदरकरतवियारु
 लुचईलपसीसधजलेवीसोईजेकेसोईलागेप्यारी ॥ १ ॥
 घेवरमालपूवामोतीलाउओहनसरससवारी ॥ दूधव
 रामांघनदहीरोहीदामुलनकीपरमरुचिकारी ॥ २ ॥
 ओरोदूधसद्यधोरीकोलेआईरोहिनीमेहेतारी ॥ सर
 स्यामवलिरांमस्योमिलिजेवहोजननीजांउवलिरारी
 ॥ ३ ॥ ४ ॥ अथसिंघारवडेहोयवेकेपदा ॥ रागगोरी ॥ अंग
 आभूषनजननीउतारत ॥ दुल्हरीग्रीवमालमोतीनकी
 केउरलेंभुजास्योमनिहारत ॥ १ ॥ दुद्रावलिउतारतकरि
 तेधरतमनहिमनवारत ॥ रोहिनीभोजनकरोहोचदाई
 वारिवारिकरिआरत ॥ २ ॥ भूषेभएस्योमहलधरा
 यहोविचारत ॥ सरदासप्रभुमातजसोदापटलेंदुहंन
 अंतररजहारत ॥ ३ ॥ १ ॥ रागईमनि ॥ कहाकहाखेलेहो

॥ ॥ नित्य लालनवातकहोजूमोसोंवनकी ॥ आउउछंगसांवरेमो
॥ ॥ २१९ हनगौरजपोछोहोजुवरनकी ॥ सुंदरवदनकमलकुं
 भिलांनोओरेदिसाभईयातनकी ॥ रसिकप्रीतमसोक
 हेतिनंदरांनीवलिवलिछगनमगनकी ॥ २॥ २॥ **अथ**
वीरीकेपदा ॥ रागईमनि ॥ सोहतनासिकागिरधरग
 जमोती ॥ खोलतवीरावातहसनडोलतअरुनअधर
 कीदीनीपोती ॥ १॥ कुंडललोलेकपोलविजतजग
 गातमुषमंजुलजोती ॥ गोविंदप्रभुकोजुश्रीमुषनिर
 षतरसनाकहाकहोमतिवोती ॥ २॥ **ईमनि ॥** लेंगधे
 गिरधरदेपठईअपनेश्रीमुषकोआधीवीरी ॥ सुनहुसं
 इसोप्राणप्यारेकोकिसकुचतआवेकिननियरी
 १॥ घूंघटघोलिनेनभोरदेखोवांचिलेउप्रीतमकीची ॥
 १॥ कुंभनदासप्रभुभुजभरिभेदोंआंकोभरिमिलि
 छतियांकरिसोरी ॥ २॥ २॥ **अथसेनसन्मुखकेपदा ॥ रा**
गईमनि ॥ सषीमोहनअतिवने ॥ सीसरिपारोफरह
 रातवरुहाचंद्रविचराषीचंपकलीगतिगने ॥ १॥ लाल
 काछिनीकरिछुद्रघंटिकाऊनऊनातगतिलेतगु
 तागुगताततततरंगसने ॥ गोविंदप्रभुसरंगभरे
 निर्जेतसकलकलाप्रवीनवृजनपतने ॥ २॥ १॥ **रागई** २१९

ईमनि कहीनपरेहोरसिककुंवरकीकुंवराडी ॥ कोटिमदन
 चक्रितविलोकितपरसतनखइंडुकिरनिजुनडाई ॥
 कंकनबलयहारगजमोतीकंठमणिरेषियतअंगअं
 गमेंगांई ॥ सुघरसुजानस्वरूपमुलछनगोविंदप्रभु
 पीयसवविधिसुंदरमनिराडी ॥ २॥ **रागईमुषि ॥** आ
 यहेहमारेकोऊसंगपूजनचलहुकदमदुनदेवी ॥ भाव
 भातिमानतिसवहिनेकीकोमनाकोतलमुषदसरस
 सुरसेवी ॥ १॥ पूजवतसकलघोषकीवलितकाहूकीक
 छुलेवी ॥ गोविंदप्रभुसौकहेतिदृषभांननंदिनीसुना
 इसुनाइकछुवातओरेवीरी ॥ २॥ **ईमनि ॥** मथुरान
 गरकीउगरमेंचलेजतिपाएरीहरिहीरा ॥ सुनिराभदूल
 टभएडोलतगोकुलगांमकोअहीरा ॥ १॥ कवरुंकगाव
 तेवेनवजावमवसीवदजमुनाकेतीरा ॥ सरदासप्रभु
 सिकसितोमनिहंसिहंसिरीयोमोहिवीरा ॥ २॥ ४॥ कां
 नरो ॥ रुपारसनेकमलदलफूले ॥ भूविलासदेखेको
 टिकमनमथरहेभूले ॥ १॥ कमलवदनपरकुटिलअ
 लकछविमोतिनअवनंसरदेरूले ॥ गोविंदप्रभूप्या ॥
 रीसंगवेढेकालिंडीकेकूले ॥ २॥ ४॥ **ईमनि ॥** रंगम

॥ नित्य ॥ हलरंगी लोलाल बेठे रंग भरे ॥ हसि गिरिजा त प्रेयसी अं
 ॥ २२० ॥ कमल बिल गुहार समत परस्पर मन हरो ॥ कुच अंत
 र गाढे अलिंग नरे तल लन पिया भुज वस परो ॥ गो
 विंद प्रभु पीय प्यारी संग बेठे गावत तो न वितान नरे
 २ ॥ ईमनि ॥ मोहन रायली नीरी उर छतियां ॥ चंच
 ल चपल मगने नीराधे अनूप मविराजित ए सवरस
 की गतियां ॥ नष सिषरूप अनूप मगधे बोला म
 धुरे सुरवतियां ॥ कुंभ नदा सगिर धर वस की ने जमु नपु
 लिन सरद की रतियां ॥ २ ॥ ईमनि ॥ मोहन राय बो
 लीरी अधरतियां ॥ उठि चलि वेगिलाल गिरिधर
 पेण हलें पीय की पतिया ॥ सुनि मृदु वचन प्रति
 आतुर धर धर करे री ॥ तिया ॥ कुंभ नदा सलाल गिर
 धर की मानिल ईस वतियां ॥ २ ॥ राग हमीर ॥ मान
 छटि गयोरी निरपत मोहन वदन ॥ नेन सौ नेन मिला
 वत ही मुसिकांनी परस्पर भयो विरह दुषकदन ॥
 सुभग कपोल लोल कुंडल छवि ओर गुन रूप रेख सर
 न ॥ गोविंद प्रभु मुष सोभा परवारी फेरि डारों कोटि म
 दन ॥ २ ॥ पद ॥ ॥ अथ मान के पद ॥ राग विहागरो २२०

येहे लें तो आयरे खोलाल अपनी माननी की सोभा ॥ पा
 छें तो मनायली जो प्यारे हो गोविंदा ॥ कर पर दीये कपो
 ल रहीरी नेन न मुदा ॥ कमल विछाय मोनो सो यो मुख
 चंदा ॥ २ ॥ रस भरी भोंहे ता पर भ्रमर वेठे अरवरात इंदु तर
 आयो मकरंद अरु विंदा ॥ नंददा सप्रभु ए सी प्यारी को
 रिसाई बल जा को मुष देषत मिरत दुष दंदा ॥ २ ॥
 विहागरो धनि धनि एल उली के खरन ॥ अतिस को
 मल सुभग सीतल अरु न जे में खरन ॥ नष चंद चारु
 अनूप गजित विविधि मोला धरन ॥ रुनित नं पुरु कुं
 ज विहरत परम कोति करन ॥ २ ॥ श्री नंद नंद मन मोद
 कारी विरह सागर तन ॥ विवस परमानंद छिनु छिनु
 स्याम जा के शरन ॥ २ ॥ विहागरो तो हिलाल संकेत
 की योरी ॥ लयन कुंज में हसि मिलि भांमिनि सुफल क
 रोर सभी ज्यो ही योरी ॥ कहारी कहंते रे भाग की मरि
 मा गिरिधर नो गर सरव सदी योरी ॥ कसदा सप्रभुरासि
 क मुकट मनि कों विसरे अधरां मत पी योरी ॥ २ ॥ वि
 हागरो ॥ दोरि दोरि आवत मोहि मनावत रां मषर चिक
 छ मोल लईरी ॥ जा ओ फि रिइती अपने भवन प्रतिसोवा

॥ नित्य ० तनकी एकवात कहीरी ॥ १ ॥ अंचराप सारत योल सुंनाव
 ॥ २२१ ॥ तहों कहातेरी चेरी भईरी ॥ नंददास प्रभु वेक्यो न आवत
 इनके पाइन कछु महेरी इईरी ॥ २ ॥ राग विहाग रो ॥ तोसी
 त्रियानही भाव भईरी ॥ रूपरासिर सरासिर सिकनी
 चाहे नै भए नंदला लेल दरी ॥ १ ॥ सुकित सौ दिन दृढगा
 टेई विध सुरंग चुनरी पीत पदरी ॥ कलदास प्रभु गि
 रधर नागर तुं मना गरी बेन बल नंदरी ॥ २ ॥ राग के रा
 रो ॥ मिले पिया सां करी गलीरी ॥ मरु मोहन पीयूष
 सिगहि डारी मोतिन चंपकलीरी ॥ वारिज वदन बिलो
 कि विथ कित भए धूध टमै न समात आलीरी ॥ गोविं
 द प्रभु दंपति परस्पर रहे समतरलीरी ॥ २ ॥ राग के
 दा रो ॥ एन मां नंदत आलीरी मन तेरो मोनि वेकों
 करत ॥ पीयकी अरति देषि मेरे जीय दया होत तेरी इहि
 देषि देषि सुनी ॥ १ ॥ मोसो व कहा मेरो न हो सकछु सुनि
 रीस यानी अवहौ जीया ही भरत ॥ नंददास प्रभु इती के
 वचन सुनि अंग जे सें दस्यो ते सें आंच के लगे तेरा गह
 रत ॥ २ ॥ राग के दा रो ॥ सकल वीयन में तुही जीतीरी ॥ स
 वन को भाग्य भोग बत सगरी निसालाल गिरधर न सं

गतो वेमी तीरी ॥ १ ॥ केती उपमा कहें रावरी एक मुष स्या
 म सुंदर घरे ल्याय ली तीरी ॥ रसिक प्रीतम महा मुष शयो
 राधिका हाथ कमलाल परहेजुरी तीरी ॥ २ ॥ राग के रा
 रो ॥ छांडि रे माननी स्याम संग रूसिबो ॥ रहेत तो एलीन
 जलमीन जो सुंदरी करे क्यो न रूपान वरंग संग दुखिबो ॥ १ ॥
 वेगि चलि वेगि चलि जात रां मिनि घरी कुंज मै के लिकरे
 अमी परस घुंदिबो ॥ बलिविधुदास सुंदर नंदन कुंवर सेज
 निला जन संग मदन गदल दिबो ॥ २ ॥ राग के दा रो
 रसिक दोऊ कुंजन करत विहार ॥ रतिर समत परस्पर
 दंपति स्यां मा स्यां म उर ॥ १ ॥ मुक्तामाल स्यां म अंग
 राजत पेहेरा वत उर ॥ परमानंद बलिवलि जोरी पर
 राधानंद कुं मा ॥ २ ॥ राग के दा रो ॥ स्यां माजू को स्यां म म
 नावन जा ॥ मन मुष के के चरन छुवावत मुकट लट
 क पर छांडे ॥ १ ॥ देई पीठरी ठनही जोरत एक टिकनां ही
 नांही ॥ नंददास प्रभु मोहन पियाने सें न निहाहा खों
 ही ॥ २ ॥ के दा रो ॥ अरी मैतन जतन करि पायो ॥ ए
 सो प्रीतम मो मन भायो ॥ उघरे भागि आ जुध सषी
 मेरे रसिक सिरोमनि आयो ॥ आवत ही उठिके आद

॥नित्य०

॥२२२॥

रहेअपनेदिंगवेठास्यो॥सुषचुवनदेअधरपांनकरिमेदि
सकलअंगलायो॥२॥अश्रुतरूपअनंयस्यामकोनिर
षतमनविरमायो॥निसदिनयहअपनेठाकुरकोरसि
कगूटजमुगायो॥३॥**केदारो**॥ पीयतोहिनेननही
मेंराषो॥तेरीएकरोमकीछविपरजगतवारिसवना
षो॥१॥भेटोसकलगौरसावलकीअधरसुधारसचा
खो॥रसिकप्रीतमसंगमकीवातैकाकसोंनहिभा
खो॥२॥**केदारो**॥ माननिमानिनिहोरोहोयठईतो
हिलेंनसांवरेचलिरीगरवकरिथोरो॥३॥कुजमेहेल
वेठेमनमोहनचितवतचंदचकोरो॥सुरदासप्रभुति
हारोमिलनकुंरेंनिगईमयोभोरो॥२॥**रागकेदारो**॥
पीयतुंममोहीकोअतिप्यारो॥ओरसवनमोहितजु
वहुतहेमेरेहीहोतारो॥१॥माहितकीकछूकहेतनअ
वेंसुंनोजुलंदुलारो॥रसिकरायपोंकहेतप्यारोप्या
रीमीरेसोमोहीमारो॥२॥**केदारो**॥ गढेहोऊकुंज
नकीपरछाई॥एकभुजागहेडारकदमकीएकभुजा
गलेबांई॥१॥छविसोछविलाछविलाललटाकिलपरा
एरही॥तरुतमालकनकवेलिअरुमाई॥हरिदासके

२२२

रंगमिस्यांमाकुंजविहारीभीजेपेंमरंगमांही॥२॥पर
अथपोदायवेकेपदा॥**रागकेदारो**॥पोदेलालला
डिलासंगलें॥कुंजमेहेलमेंसेजविछाईविविधि
सुगंधकुसुमरचिवंगले॥१॥कोऊकमलदलपवनक
रतहेंकोऊचांपतकरपगले॥बुजाधीशअश्रुमोभासा
गरइगनकीकटाक्षकरतरतिरंगलें॥२॥**केदारो**
होऊमिलिकरतभावतीधतियां॥गिरधरलाल
जबलराधेसंगनषमनीअंकलधतहेछतियां॥१॥ते
मीयेछिराकिरहीउजियासीसोभितसरदकीरतियां
केलरूपनीजमुंनारअभटहंदावनकृत्योवहुभति
यां॥२॥**केदारो**॥कुंजमहेलमेंपोदेहोऊ॥नंदनंद
नदृषभाननंदिनीइनकीपटतरओरनकोऊ॥ला
लकुसुमकीसंजरचीहेंकोककलाजानतहेसोऊ॥
रसिकरायरसरंगमेंभीजेपरमानंदसिंधधारेहोऊ
२॥३॥**केदारो**॥पोदेलाडिलीउरलाए॥नवसधनव
ननवकुंजसिज्यानवचतुरदेराए॥१॥गांनकरतबुज
नारीदारेसरसरागजमाए॥वनवारीभटगिरधरकी॥
छविविरहेंउरमेंछाए॥२॥**केदारो**॥नितनवम

॥ निसा

॥ २२३ ॥

हेलकुंजचित्रसारी ॥ नितनवरंगरसिकनीराधेनितनव
रंगगोवर्दनधारी ॥ १ ॥ नितनवरंगपाटपीतांबरनितन
वभोगविविधिसुषकारी ॥ नितनववासकेलिकला
रसनितनवकलसदासबलिहारी ॥ २ ॥ ५ ॥ केदारो ॥
हरियोदेहुंसेजविद्धांज ॥ चांपतचरनरहुंपाटीतरम
धुरेसुरकेदारोगांज ॥ १ ॥ सषीसवेमिलिदेवनचाईदं
पतिसुषनेननदरसांज ॥ आसकरनप्रभुमोहनना
गरयरसुषस्यामसदाहोपांज ॥ २ ॥ केदारो ॥ पो
दियेलाहमेंसेजवनाई ॥ अतिउजलहेसेजतिहारी
सोओआनिसुषदाई ॥ १ ॥ वेलतमेंनिसवहोतगई
रीसोतोनेनननीदभराई ॥ वदनजंभातअंगअंगव
तजननीपलोदतपाई ॥ २ ॥ मधुरेसुरगांऊकेदारोसु
नहुस्यामचितलाई ॥ परमानंददासकोगकुरनीद
गईफिरिआई ॥ २ ॥ ७ ॥ ॥ अडा नो ॥ योदियेघ
नस्यामवलैपालेंहो ॥ अतिअमभयोवनगैया
रावतदिवसपरीहेघांम ॥ १ ॥ सीपरीव्यारिरुरोषन
आवेरुचिरमनोहरधांम ॥ आसकरनप्रभुवारीमे
रेमोहनरजनीगईजुगजांम ॥ २ ॥ पर ॥ ८ ॥ अडा नो ॥ २२३

चांपतचरणमोहनलाल ॥ पलिकापोटीकुंवरीराधे
नागरीनववाल ॥ १ ॥ कवहुंकरगहिनेनमिलावतक
वहुंमिलावतभाल ॥ चतुर्भुजप्रभुछविनिहारतप्रीति
केप्रतिपाल ॥ २ ॥ १ ॥ राग अडा नो ॥ रुचिरुचिसेज
वनाईसषीयन ॥ रंगमहेलमेंपरिगएपरदाधरी ॥ अमी
रीसुषदाई ॥ सीतसमेरीसमरितुकीनीपीयप्यारी
सरसरिआई ॥ श्रीविहलगिरधरनकुनीनिधिपोदेओ
दिरजाई ॥ २ ॥ १० ॥ राग अडा नो ॥ वेदेधोवरतरुशेषनदी
पकपीयापोदेऊंचीचित्रसारी ॥ सुंदरबदननिहारन
कारनराखेदेवदुतजतनकरिप्यारी ॥ १ ॥ कंठलगायभु
जदेसिरहानेअधरमेंतपीवतपीयप्यारी ॥ तनमन
मित्योप्रांनप्यारेसोंनऊतनछविवादीअतिभारी ॥ २ ॥
कुंभनदासदेपतिसौभगसीवाजोरीभलीवनीअति
सारी ॥ नवनागरीमनोहरराधेनवललालश्रीगोवर्द
नधारी ॥ ३ ॥ ११ ॥ राग अडा ॥ पोदेरंगमहेलगोविंद ॥ राधि
कासंगपूरनरजनीउदितपूरनचंद ॥ १ ॥ निरषिवदनवि
लासविलसतदंपतिरसकंद ॥ देतहांनविलासविल
सतकोटिकोटिकचंद ॥ २ ॥ सोवाचंदनअंगलेपनपरसि

॥ नित्य ॥ परम आनंद ॥ कुसुमविंजनावायुदोरे सजनी परमानं
 ॥ २२४ ॥ ॥ ३ ॥ १२ ॥ अथ वीनती के पदा ॥ राग विहागरो ॥ जो पे
 चोप मिलन की होय ॥ तो क्यों रसो परे विनु देखें लावक
 रो जिनि कोय ॥ जो पे बिरह पर स्पर व्यापे तो कछु जीय
 वने ॥ लोक लाज कुल की मर जादा ए को चित्त न गते ॥
 कुंभ न दास प्रभु जात न लागी ॥ ओर कछु न सुहाइ गिर
 धर लाल तोहि विनु देखे छिनु छिनु कल विहाइ ॥ ३ ॥
 ॥ राग विहागरो मेरे जीये अंसी आयु धनी ॥ विना गुपा
 ल ॥ ओर जो सुंमिरो तो लाजे जननी ॥ कोले करे काच
 को संग्रे छांडि अमोल मनी ॥ धिये को मेरु कहा लौं की
 जें अंमर त अंक कनी ॥ २ ॥ अनक्रम वचन त्रिविधि हमारे
 जवत वस्या मधनी ॥ १ ॥ परदास स्वामिके कारन तजिला
 ज अपनी ॥ ३ ॥ ॥ राग विहागरो ॥ को जाने यह वात प्रीतिकी
 नंदनंदन विनु का सों कहिये ॥ ओर न जीय सुहात ॥ मरमी
 विना मरम को जाने स मरि स मरि पछितात ॥ रसिक प्री
 तम प्यारे कब मिलि हों देखन को जीय अकुलात ॥ २ ॥
 विहागरो ॥ प्रीतिकी तोरी तिही न्यारी ॥ सुनिरी सखी अ
 व कहलौं कही ये ए देवा तरे भारी ॥ रात दिवस मोये क

लन परत हें जल बिन मीन विचारी ॥ रसिक प्रीतम प्या
 रे के ऊपर तन मन डारों वारी ॥ २ ॥ विहागरो तो परवा
 री सांवलिया सांझी ॥ कब देखो बहवदन चंद को कंठ ला
 गे गलवांझी ॥ कब आवे गें वे दिन मेरे कब वेरी दिन
 जाई ॥ रसिक प्रीतम अब के जो पांउला गिर हो उर मा
 ई ॥ ३ ॥ विहागरो ॥ सरनिति हारी आयो ॥ वस्त्र भव
 होत जनम भर कत भए मो कूं ॥ अजहं रन पायो ॥
 जासा धन तें होत जीव गति सो न कछु बनि आयो ॥ दे
 वि प्रपंच जगत के तातें जीव बहत अकुलायो ॥ २ ॥
 तीरथ हत जप तप संजम मे एह सब जगत भुलायो
 एह अघोर कलिका जनि सबहि न फल इरिडरा ॥
 यो ॥ ३ ॥ करुण सागर अधम उधारण यह जस सब
 जग छाडी ॥ चरण कमल अब आहि गहि हें मन वच
 कर्म करि धायो ॥ ४ ॥ तुं मत नि अनत तोर नहि मो कूं दे
 रत हो सिर नायो ॥ धर्यो पांन मेरे मस्त कपर मेरो भ
 यो मनोरथ भायो ॥ ५ ॥ दैवी जीव उधारण कारण पुहि
 मारग प्रकटायो ॥ अपुने प्रबल प्रताप ते जतेर विमुत
 आसन सायो ॥ ६ ॥ तुं म सो राता भयो न के हें वेद पुरांन

॥ नित्य ॥ वतायो ॥ अपुनो सरवसुहजभूषनकों सरनागतिर
 ॥ २२५ ॥ रसायो ॥ **विहागरो** ॥ श्रीवल्लभदेवसहायजिनकों
 मायाकालव्यापतनहीउनकुं मुकुमुनिसाक्षव
 ताए ॥ १ ॥ जोकछमागतदेतकपाकरिसेसेकुंवरक
 र्हाए ॥ तनमनधनन्योछावरिकरितोउरआनंदन
 समाए ॥ २ ॥ श्रीविहलनाथवसतजीयाकेताको
 कहाकरेजमराए ॥ विसुदासवापरवहीतकपाकरि
 सेवाइदजुवताए ॥ ३ ॥ **विहागरो** ॥ श्रीवल्लभदेवधनी
 जिन ॥ निरभयहोतकालभयनाहीसहारहेतम
 गनी ॥ १ ॥ कलिमलरहितरह्यानहीव्यापतत्रिवि
 धितापदलनी ॥ करतमहेलमेंरहेलनिरंतरजसगा
 वतवरुनी ॥ २ ॥ श्रीविहलनाथसरनिआएजेतेधनधं
 नविपुनी ॥ विसुदासवाकोंगिनतआपुनोकरिश्रीगे
 वर्दनधरुनी ॥ ३ ॥ **विहागरो** ॥ हमतोश्रीविहलनाथ
 हिजाने ॥ अन्यदेवसेवनकितकरियेनाकछउरमेंआ
 ने ॥ १ ॥ कोऊभजोसुरपतिकोऊभजोगनपतिकोऊ
 भजोवेदपुरांने ॥ कोऊभजोसनकारिसुनिनारको
 ऊभजोसंकरध्यांने ॥ २ ॥ कोऊभजोनेतिनेतिकरि

निर्गुनकोऊभजोपरनिरवांने ॥ कोऊभजोमंत्रतंत्रन
 त्रनकोसबेफिरतभैराने ॥ ३ ॥ कोऊभजोनोओरचारि
 पदारथएसबमुक्तलेसकेदाने ॥ करुनानिधिगिरि
 धरभजिद्रुकारिलीलापाने ॥ ४ ॥ **रागविहागरो** ॥ श्री
 मुषदेविबोईकजे ॥ श्रीविहलसुतनअंगअंगप्र
 तिनेनरूपभरिपीजे ॥ १ ॥ सुंदरनेनप्रवारमृतमें
 येसुनिअवननपुरपीजे ॥ चरनकमलमहेमाउरअ
 तरनिसदिनहेरसभीजे ॥ २ ॥ दरुनपरमरयालहि
 परसतकोरिजनमअघुखीजे ॥ कलदासवल्लि
 विहलपरवारिआपुनपोदीजे ॥ ३ ॥ **विहागरो** ॥ क
 पासिंधुश्रीविहलनाथ ॥ चरणकमलछाया निस्त
 रेजेरतेअधमअनाथ ॥ बाधाकछनरहीअवतन
 मेंभयेसुइहिसनाथ ॥ चतुर्भुजप्रभृतुंसदाविरा
 जोश्रीगोवर्दनधरसाथ ॥ २ ॥ **विहागरो** ॥ श्रीकल
 श्रीकलशरणममउचरे ॥ रेंनिदिननितप्रतिसदाप
 लखिनुघरीकरतविधंसजनअपिलअघपरहरे ॥
 १ ॥ होतहरिरूपवृजभूषभावतसदापुष्टिलेनासक
 लसारउरमेंधरे ॥ होतनिसदिवसआनंदउरमेंरखो

॥ नित्य ॥ अगमभवसिंधकोविनासाधनतरो ॥ २ ॥ रमासि
॥ २२६ ॥ वसेससनकादिकश्रुकसर्वदाव्यासनारदरेपल
कमुषनादरे नामगिरधरनमहेमाअतुलजग
मगेसरनिकुलरासकीरतिनिगमनेतिनेतिक
रो ॥ ३ ॥ विहागरो ॥ आसरोएकदृष्टश्रीबलभा
धीशको ॥ मानसीतितीकीमुख्यसेवात्यसनलो
कवैदिकत्यागिरीरनिगोपीशको ॥ १ ॥ दीनताभाव
उद्वोधनगानसोघोषत्रियाभावनाउभेजाने
॥ कलनामस्फुरेपलनआग्यादरेकृतकचनवि
यासमनचित्तज्ञाने ॥ २ ॥ भगवदीजानिसत्संग
कूंअनुसरेनदेघेरोषओरसत्यभावे ॥ पुष्टिपंथ
मरमदसधर्मएहिविधिकहेसदाचित्तमेंश्रीदा
रिकेशराखे ॥ ३ ॥ विहागबलभहीकोभरोसोमो
हिश्रीवल्लभहीकोभरोसो ॥ अन्यदेवज्ञानोनहिमां
नोइनकोभरोसोषरोसो ॥ १ ॥ समरिबिचारसोच
मनमेरेवारवारकरुंतोसो ॥ रसिकमुधासागर
कोंछोंडिकेंक्योंपीवतजलओसो ॥ २ ॥ पद ॥ इति
॥ नित्यपदकेसंपूर्ण ॥ श्रीसुभंभयात ॥ ॥

www.vallabhacharya-agrahar.org